उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

दिनांक : 29—06—2021

समाज विज्ञान विद्याशाखा द्वारा गोद लिये गये चाड़ी, नैनी गॉव के प्रथम कार्यक्रम की रिपोर्ट

प्रो. संतोषा कुमार

डॉ. आनन्दा नन्द त्रिपाठी

डॉ. संजय कुमार सिंह

श्री सुनील कुमार

डॉ. त्रिविक्रम तिवारी

डॉ. दीपशिखा श्रीवास्तव

श्री रमेश चन्द्र यादव

श्री मनोज कुमार

डॉ. अभिषेक सिंह

समाज विज्ञान विद्याशाखा

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

मुक्त विश्वविद्यालय चला गॉव की ओर

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय के समाज विज्ञान विद्याशाखा ने चांड़ी, नैनी गॉव को लिया गोद।

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज ने राज्यपाल के निर्देश पर एवं कुलपति प्रो. सीमा सिंह के निर्देशन में समाज विज्ञान विद्याशाखा ने चांड़ी, TSL नैनी, प्रयागराज को गोद लिया है। गोद लिए गॉव में दिनांक 29/06/2021 को समाज विज्ञान विद्याशाखा ने कोविड–19 महामारी एवं बचाव के संदर्भ में जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

प्रो. संतोषा कुमार, प्रभारी, समाज विज्ञान विद्याशाखा के नेतृत्व में विभाग के सभी शिक्षकगण गॉव में पहुॅचे तो गॉव में कौतुहल का माहौल था। जब उन्हें यह बताया गया कि उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय ने उनके गॉव को गोद लिया है तो महिलाओं और बच्चों के चेहरे खुशी से चमक उठे। प्रो. संतोषा कुमार ने बताया कि इस गॉव में कैम्प लगाकर यहॉ के लोगों को शिक्षा, स्वास्थ्य, महिला सुरक्षा, पर्यावरण संरक्षण एवं आत्मनिर्भरता के कार्यक्रम निरन्तर किये जाऐगें।

समाज विज्ञान विद्याशाखा के प्राध्यापकों ने गॉव में जाकर महिलाओं से बातचीत कर उनको शिक्षा, स्वास्थ्य के बारे में बताया, साथ ही वर्तमान में कोविड–19 महामारी के बारे में विस्तृत चर्चा किया गया। कोविड–19 महामारी से बचाव एवं सुरक्षा के बारे में जागरूक किया गया, कोविड–19 महामारी से अपना एवं अपने परिवार को टीकाकरण कराने पर जोर दिया गया।

गॉव के लोगों को यह भी बताया गया कि महामारी से डरना नहीं है अपितु सकारात्मक सोच के साथ कोविड–19 गाइड लाइन का पालन कर लड़ने पर जोर दिया गया। महामारी के बारे में दी गयी जानकारी से गॉव के महिलाओं एवं बच्चों के बीच आत्मविश्वास का भाव दिखा।

साथ ही समाज विज्ञान विद्याशाखा की तरफ से कोविड–19 से बचाव हेतु मास्क, सेनेटाइजर, पम्पलेट भी वितरित किया गया।

कार्यक्रम में प्रधान श्रीमती पार्वती निषाद एवं प्रधानपति श्री राजेश निषाद ने सभी प्राध्यापको का स्वागत किया एवं विश्वविद्यालय द्वारा गॉव को गोद लेने के प्रति हर्ष व्यक्त करते हुए धन्यवाद ज्ञापित किया ।

सुमंगलम संस्था के श्री अजीत जी ने विश्वविद्यालय के इस कार्यक्रम को समाज में बदलाव हेतु क्रान्तिकारी कदम बताया। साथ ही साथ उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय की प्रवेश से सम्बन्धित नियमों एवं महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर भी विस्तृत चर्चा की गई।

अन्त में प्रो. संतोषा कुमार ने गॉव के महिलाओं, बच्चों, बुजुर्गो के बीच कोविड–19 एवं वैक्शिनेशन के प्रति सजगता पर बल दिया। इस अवसर पर विभाग के अन्य प्राध्यापकों डॉ. आनन्दा नन्द त्रिपाठी, डॉ. संजय कुमार सिंह, श्री सुनील कुमार, डॉ. त्रिविक्रम तिवारी, डॉ. दीपशिखा श्रीवास्तव, श्री रमेश चन्द्र यादव एवं श्री मनोज कुमार आदि ने ग्रामीण के बीच खासकर महिलाओं, बच्चों के बीच विस्तृत चर्चा की।

हिन्दुस्थान समाचार
587k Followers

Follow

मुक्त विवि : समाज विज्ञान विद्या शाखा ने चांडी गांव में लगाया कैम्प

29 Jun 21 . 7:54 PM

नए शैक्षिक सत्र में गांवों में जलेगी शिक्षा की अलख

प्रयागराज, 29 जून (हि.स.)। उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन टंडन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज में राज्यपाल के निर्देश एवं कुलपति प्रो. सीमा सिंह के निर्देशन में समाज विज्ञान विद्या शाखा ने चांडी टीएसएल नैनी प्रयागराज को गोद लिया है। गोद लिए गांव में मंगलवार को समाज विज्ञान विद्या शाखा ने वृक्षारोपण एवं कोविड-19 महामारी एवं बचाव के संदर्भ में जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया।

समाज विज्ञान विद्या शाखा प्रभारी प्रो. संतोष कुमार के नेतृत्व में सभी शिक्षकों के चांडी गांव पहुंचने पर वहां कौतूहल का माहौल बन गया। प्रो. संतोष कुमार ने बताया कि इस गांव में कैम्प लगाकर यहां के लोगों को शिक्षा, स्वास्थ्य, महिला सुरक्षा, पर्यावरण संरक्षण एवं

कार्यक्रम में ग्राम प्रधान पार्वती निषाद एवं प्रधान पति राजेश निषाद ने अध्यापकों का स्वागत किया एवं विश्वविद्यालय द्वारा गांव को गोद लेने पर हर्ष व्यक्त करते हुए धन्यवाद ज्ञापित किया। सुमंगल संस्था के अजीत ने विश्वविद्यालय के इस कार्यक्रम को समाज में बदलाव हेतु क्रांतिकारी कदम बताया। इस अवसर पर डॉ आनन्दानन्द त्रिपाठी, डॉ संजय कुमार सिंह, सुनील कुमार, डॉ त्रिविक्रम तिवारी, डॉ दीपशिखा श्रीवास्तव, रमेश चंद यादव, मनोज कुमार आदि ने ग्रामीणों को विश्वविद्यालय की कार्य योजनाओं से अवगत कराया।

हिन्दुस्थान समाचार/विद्या कान्त

समय से पहले 'समय' पर नजर

न्यायाधीश

प्रयागराज, बुधवार,30 जून, 2021

नए शैक्षिक सत्र से गांवों में जलेगी शिक्षा की अलख

समाज विज्ञान विद्या शाखा ने चांडी गांव में कैंप लगाया

प्रयागराज।उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन टंडन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज में राज्यपाल के निर्देश एवं कुलपति प्रोफेसर सीमा सिंह के निर्देशन में समाज विज्ञान विद्या शाखा ने चांडी टीएसएल नैनी प्रयागराज को गोद लिया है। गोद लिए गांव में मंगलवार को समाज विज्ञान विद्या शाखा ने वृक्षारोपण एवं कोविड-19 महामारी एवं बचाव के संदर्भ में जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया। प्रोफेसर संतोषा कुमार, प्रभारी, समाज विज्ञान विद्या शाखा के नेतृत्व में सभी शिक्षकों के चांडी गांव पहुंचने पर वहां कौतूहल का माहौल बन गया। मुक्त विश्वविद्यालय की समाज विज्ञान विद्या शाखा ने चांडी गांव को गोद लेकर उसे संवारने का संकल्प लिया है।

प्रोफेसर संतोष कुमार ने बताया कि इस गांव में कैंप लगाकर यहां के लोगों को शिक्षा, स्वास्थ्य, महिला सुरक्षा, पर्यावरण संरक्षण एवं आत्मनिर्भरता के कार्यक्रम निरंतर किए जाएंगे।

समाज विज्ञान विद्या शाखा के प्राध्यापकों ने गांव में जाकर महिलाओं से बातचीत कर उनको सरकारी योजना के बारे में बताया। साथ ही वर्तमान में कोविड-19 महामारी के बारे में विस्तृत चर्चा कर कोविड-19 महामारी से बचाव एवं सुरक्षा के बारे में जागरूक किया गया। टीकाकरण कराने पर जोर दिया गया। गांव के लोगों को यह भी बताया गया कि महामारी से डरना नहीं है अपितु सकारात्मक सोच के साथ कोविड-19 गाइडलाइन का पालन करने पर जोर दिया गया। महामारी के बारे में दी गई जानकारी से गांव की महिलाओं एवं बच्चों के बीच आत्मविश्वास का भाव दिखा। साथ ही समाज विज्ञान विद्या शाखा की तरफ से मास्क,सेनीटाइजर, पंपलेट वितरित किया गया। कार्यक्रम में ग्राम प्रधान श्रीमती पार्वती निषाद एवं प्रधान पति श्री राजेश निषाद ने अध्यापकों का स्वागत किया एवं विश्वविद्यालय द्वारा गांव को गोद लेने पर हर्ष व्यक्त करते हुए धन्यवाद ज्ञापित किया। तथा सुमंगल संस्था के श्री अजीत ने विश्वविद्यालय के इस कार्यक्रम को समाज में बदलाव हेतु क्रांतिकारी कदम बताया । अंत में प्रोफेसर संतोषा कुमार ने गांव के महिलाओं, बुजुर्गों के बीच कोविड-19 के प्रभाव को कम करने के लिए वैक्सीनेशन के प्रति जागरूकता पर बल दिया। इस अवसर पर डॉ आनन्दानन्द त्रिपाठी, डॉ संजय कुमार सिंह, सुनील कुमार, डॉ त्रिविक्रम तिवारी, डॉ दीपशिखा श्रीवास्तव, रमेश चंद यादव, मनोज कुमार आदि ने ग्रामीणों को विश्वविद्यालय की कार्य योजनाओं से अवगत कराया।

WEBSITE : www.jeevanexpress.in

JEEVAN EXPRESS

PRAYAGRAJ | WEDNESDAY | JUNE 30, 2021

Social Science Branch of UPRTOU adopted Chandi village of Yamunapar

Information given about prevention of corona epidemic in the camp set up on Tuesday

STAFF REPORTER

PRAYAGRAJ: Under the direction of the Governor and on the instruction of Vice Chancellor of UPRTOU, Professor Seema Singh, the Social Science Vidya Branch has adopted Chandi village in the industrial area of Yamunapar. On Tuesday, in the adopted village, an awareness program was organized in the context of tree plantation and COVID-19 epidemic and prevention. All the teachers reached Chandi village under the leadership of in-charge, Social Science Vidya Branch Professor Santosha Kumar.

Professor Santosha Kumar said that by setting up camps in this village, programs for education, health, women's safety, environmental protection and self-reliance will be done continuously. The professors of the Social Science School went to the village and talked to the women and told them about the government schemes. Along with this, after having a detailed discussion about the present COVID-19 epidemic, awareness was made about the prevention and safety of COVID-19 epidemic. The information given about the epidemic showed a sense of confidence among the women and children of the village. Along with this, masks, sanitizers, pamphlets were distributed. In the program, the village head Mrs. Parvati Nishad and the head husband Rajesh Nishad welcomed the teachers and expressed their happiness over the adoption of the village by the university and thanked them. Ajit of Sumangal Sanstha described this program of the university as a revolutionary step for change in the society. Dr. Anandanand Tripathi, Dr. Sanjay Kumar Singh, Sunil Kumar, Dr. Trivikram Tiwari, Dr. Deepshikha Srivastava, Ramesh Chand Yadav, Manoj Kumar etc were told about planning of the university to the villagers.

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

DAVP से विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

सदभावना का प्रतीक

सदभावना का प्रतीक बस्ती, सिद्धार्थनगर, संतकबीरनगर, बिजनौर, कुशीनगर, लखीमपुरखीरी, सीतापुर, प्रतापगढ़, हाथरस, एटा, अंबेडकरनगर, हरदोई, देवरिया, सुल्तानपुर, बहराइच, प्रयागराज, अयोध्या, बलरामपुर, आदि जिलों में प्रसारित

वर्ष -12, अंक- 58 बस्ती, बुधवार 30 जून 2021, पृष्ठ - 8, मूल्य - 1.50

R.N.I. No. : UPHIN/2011/38359

सदभावना का प्रतीक (हिन्दी दैनिक) बस्ती

प्रयागराज

नए शैक्षिक सत्र में गांवों में जलेगी शिक्षा की अलख

समाज विज्ञान विद्या शाखा ने चांडी गांव में लगाया कैम्प

सदभावना न्यूज प्रयागराज

उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन टंडन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज में राज्यपाल के निर्देश एवं कुलपति प्रोफेसर सीमा सिंह के निर्देशन में समाज विज्ञान विद्या शाखा ने चांडी टीएसएल नैनी प्रयागराज को गोद लिया है। गोद लिए गांव में मंगलवार को समाज विज्ञान विद्या शाखा ने वृक्षारोपण एवं कोविड-19 महामारी एवं बचाव के संदर्भ में जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया। प्रोफेसर संतोषा कुमार, प्रभारी, समाज विज्ञान विद्या शाखा के नेतृत्व में सभी शिक्षकों के चांडी गांव पहुंचने पर वहां कौतूहल का माहौल बन गया। मुक्त विश्वविद्यालय की समाज विज्ञान विद्या शाखा ने चांडी गांव को गोद लेकर उसे संवारने का संकल्प लिया है।

प्रोफेसर संतोष कुमार ने बताया कि इस गांव में कैंप लगाकर यहां के लोगों को शिक्षा, स्वास्थ्य, महिला सुरक्षा, पर्यावरण संरक्षण एवं आत्मनिर्भरता के कार्यक्रम निरंतर किए जाएगे।

समाज विज्ञान विद्या शाखा के प्राध्यापकों ने गांव में जाकर महिलाओं से बातचीत कर उनको सरकारी योजना के बारे में बताया। साथ ही वर्तमान में कोविड-19 महामारी के बारे में विस्तृत चर्चा कर कोविड-19 महामारी से बचाव एवं सुरक्षा के बारे में जागरूक किया गया। टीकाकरण कराने पर जोर दिया गया। गांव के लोगों को यह भी बताया गया कि महामारी से डरना नहीं है अपितु सकारात्मक सोच के साथ कोविड-19 गाइडलाइन का पालन करने पर जोर दिया गया। महामारी के बारे में दी गई जानकारी से गांव की महिलाओं एवं बच्चों के बीच आत्मविश्वास का भाव दिखा। साथ ही समाज विज्ञान विद्या शाखा की तरफ से मास्क, सेनीटाइजर, पंपलेट वितरित किया गया। कार्यक्रम में ग्राम प्रधान श्रीमती पार्वती निषाद एवं प्रधान पति श्री राजेश निषाद ने अध्यापकों का स्वागत किया एवं विश्वविद्यालय द्वारा गांव को गोद लेने पर हर्ष व्यक्त करते हुए धन्यवाद ज्ञापित किया। तथा सुमंगल संस्था के श्री अजीत ने विश्वविद्यालय के इस कार्यक्रम को समाज में बदलाव हेतु क्रांतिकारी कदम बताया । अंत में प्रोफेसर संतोषा कुमार ने गांव के महिलाओं, बुजुर्गों के बीच कोविड-19 के प्रभाव को कम करने के लिए वैक्सीनेशन के प्रति जागरूकता पर बल दिया। इस अवसर पर डॉ आनन्दानन्द त्रिपाठी, डॉ संजय कुमार सिंह, सुनील कुमार, डॉ त्रिविक्रम तिवारी, डॉ दीपशिखा श्रीवास्तव, रमेश चंद यादव, मनोज कुमार आदि ने ग्रामीणों को विश्वविद्यालय की कार्य योजनाओं से अवगत कराया

दैनिक
लोकमित्र
सच्चाई की जंग

वर्ष : 27 | अंक : 239
प्रतापगढ़ | बुधवार , 30 जून-2021
पृष्ठ : 8 | मूल्य : 3 रुपये

नए शैक्षिक सत्र में गांवों में जलेगी शिक्षा की अलख

समाज विज्ञान विद्या शाखा ने चांडी गांव में कैंप लगाया

लोकमित्र ब्यूरो

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन टंडन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज में राज्यपाल के निर्देश एवं कुलपति प्रोफेसर सीमा सिंह के निर्देशन में समाज विज्ञान विद्या शाखा ने चांडी टीएसएल नैनी प्रयागराज को गोद लिया है। गोद लिए गांव में मंगलवार को समाज विज्ञान विद्या शाखा ने वृक्षारोपण एवं कोविड-19 महामारी एवं बचाव के संदर्भ में जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया। प्रोफेसर संतोषा कुमार, प्रभारी, समाज विज्ञान विद्या शाखा के नेतृत्व में सभी शिक्षकों के चांडी गांव पहुंचने पर वहां कौतूहल का माहौल बन गया। मुक्त विश्वविद्यालय की समाज विज्ञान विद्या शाखा ने चांडी गांव को गोद लेकर उसे संवारने का संकल्प लिया है। प्रोफेसर संतोष कुमार ने बताया कि इस गांव में कैंप लगाकर यहां के लोगों को शिक्षा, स्वास्थ्य, महिला सुरक्षा, पर्यावरण संरक्षण एवं आत्मनिर्भरता के कार्यक्रम निरंतर किए जाएंगे।

समाज विज्ञान विद्या शाखा के प्राध्यापकों ने गांव में जाकर महिलाओं से बातचीत कर उनको सरकारी योजना के बारे में बताया। साथ ही वर्तमान में कोविड-19 महामारी के बारे में विस्तृत चर्चा कर कोविड-19 महामारी से बचाव एवं सुरक्षा के बारे में जागरूक किया गया। टीकाकरण कराने पर जोर दिया गया। गांव के लोगों को यह भी बताया गया कि महामारी से डरना नहीं है अपितु सकारात्मक सोच के साथ कोविड-19 गाइडलाइन का पालन करने पर जोर दिया गया।

महामारी के बारे में दी गई जानकारी से गांव की महिलाओं एवं बच्चों के बीच आत्मविश्वास का भाव दिखा।

साथ ही समाज विज्ञान विद्या शाखा की तरफ से मास्क, सेनीटाइजर, पंपलेट वितरित किया गया। कार्यक्रम में ग्राम प्रधान श्रीमती पार्वती निषाद एवं प्रधान पति राजेश निषाद ने अध्यापकों का स्वागत किया एवं विश्वविद्यालय द्वारा गांव को गोद लेने पर हर्ष व्यक्त करते हुए धन्यवाद ज्ञापित किया। तथा सुमंगल संस्था के श्री अजीत ने विश्वविद्यालय के इस कार्यक्रम को समाज में बदलाव हेतु क्रांतिकारी कदम बताया। अंत में प्रोफेसर संतोषा कुमार ने गांव के महिलाओं, बुजुर्गों के बीच कोविड-19 के प्रभाव को कम करने के लिए वैक्सीनेशन के प्रति जागरूकता पर बल दिया। इस अवसर पर डॉ आनन्दानन्द त्रिपाठी, डॉ संजय कुमार सिंह, सुनील कुमार, डॉ त्रिविक्रम तिवारी, डॉ दीपशिखा श्रीवास्तव, रमेश चंद यादव, मनोज कुमार आदि ने ग्रामीणों को विश्वविद्यालय की कार्य योजनाओं से अवगत कराया।

11 वर्ष पूर्ण : स्थापना दिवस पर आप सभी को हार्दिक बधाई

हिन्दी दैनिक

इलाहाबाद एक्सप्रेस

वर्ष : 12 अंक : 90, प्रयागराज, बुधवार 30 जून 2021, पृष्ठ 8, मूल्य 1 रुपया

सच का आधार ..

समाज विज्ञान विद्या शाखा ने चांडी गाँव में लगाया कैम्प

नए शैक्षिक सत्र में गाँवों में जलेगी शिक्षा की अलख

इलाहाबाद एक्सप्रेस

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन टंडन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज में राज्यपाल के निर्देश एवं कुलपति प्रो. सीमा सिंह के निर्देशन में समाज विज्ञान विद्या शाखा ने चांडी टीएसएल नैनी प्रयागराज को गोद लिया है। गोद लिए गांव में मंगलवार को समाज विज्ञान विद्या शाखा ने वृक्षारोपण एवं कोविड-19 महामारी एवं बचाव के संदर्भ में जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया।

समाज विज्ञान विद्या शाखा प्रभारी प्रो. संतोष कुमार के नेतृत्व में सभी शिक्षकों के चांडी गांव पहुंचने पर वहां कौतूहल का माहौल बन गया। प्रो. संतोष कुमार ने बताया कि इस गांव में कैम्प लगाकर यहां के लोगों को शिक्षा, स्वास्थ्य, महिला सुरक्षा, पर्यावरण संरक्षण एवं आत्मनिर्भरता के कार्यक्रम निरंतर किए जाएंगे।

समाज विज्ञान विद्या शाखा के प्राध्यापकों ने गांव में जाकर महिलाओं से बातचीत कर उनको सरकारी योजना के बारे में बताया। साथ ही वर्तमान में कोविड-19 महामारी से बचाव एवं सुरक्षा के बारे में जागरूक करते हुए टीकाकरण कराने पर जोर दिया गया। गांव के लोगों को बताया गया कि महामारी से डरना नहीं है अपितु सकारात्मक सोच के साथ कोविड-19 गाइडलाइन का पालन करने पर जोर दिया गया। महामारी के बारे में दी गई जानकारी से गांव की महिलाओं एवं बच्चों के बीच आत्मविश्वास का भाव दिखा। साथ ही मास्क, सेनीटाइजर, पंपलेट वितरित किया गया।

कार्यक्रम में ग्राम प्रधान पार्वती निषाद एवं प्रधान पति राजेश निषाद ने अध्यापकों का स्वागत किया एवं विश्वविद्यालय द्वारा गांव को गोद लेने पर हर्ष व्यक्त करते हुए धन्यवाद ज्ञापित किया। सुमंगल संस्था के अजीत ने विश्वविद्यालय के इस कार्यक्रम को समाज में बदलाव हेतु क्रांतिकारी कदम बताया। इस अवसर पर डॉ आनन्दानन्द त्रिपाठी, डॉ संजय कुमार सिंह, सुनील कुमार, डॉ त्रिविक्रम तिवारी, डॉ दीपशिखा श्रीवास्तव, रमेश चंद यादव, मनोज कुमार आदि ने ग्रामीणों को विश्वविद्यालय की कार्य योजनाओं से अवगत कराया।

अंतर्राष्ट्रीय न्याय दिवस व्याख्यान

Legal Position of Women in India

(भारत में महिलाओं की वैधानिक स्थिति)

दिनांक : 17 जुलाई 2021

व्याख्यान रिपोर्ट

संयोजक : प्रो.(डॉ.) संतोषा कुमार

सह–संयोजक : डॉ. आनन्दा नन्द त्रिपाठी

आयोजन सचिव : डॉ. त्रिविक्रम तिवारी

राजनीति विज्ञान

समाज विज्ञान विद्याशाखा

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

अंतर्राष्ट्रीय न्याय दिवस के अवसर पर आज दिनांक 17 जुलाई 2021 को उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय के समाज विज्ञान विद्याशाखा के राजनीति विज्ञान विभाग द्वारा "भारत में महिलाओं की वैधानिक स्थिति" विषय पर ऑनलाइन व्याख्यान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि एवं मुख्य वक्ता इलाहाबाद उच्च न्यायालय, प्रयागराज की माननीया न्यायमूर्ति श्रीमती मंजू रानी चौहान जी रहीं तथा कार्यक्रम की अध्यक्षता उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. अरुण कुमार गुप्ता जी ने की।

कार्यक्रम का शुभारंभ माँ सरस्वती की वंदना से हुआ। जिसके पश्चात समाज विज्ञान विद्‌याशाखा के प्रभारी निदेशक प्रो. संतोषा कुमार ने मुख्य अतिथि का परिचय दिया एवं सभी प्रतिभागियों के स्वागत किया।

माननीय अतिथियों का स्वागत एवं परिचय देते हुए कार्यक्रम संयोजक प्रो. संतोषा कुमार

अपने वक्तव्य में मुख्य अतिथि एवं मुख्य वक्ता माननीया न्यायमूर्ति श्रीमती मंजू रानी चौहान जी ने भारत में महिलाओं की संवैधानिक एवं वैधानिक स्थिति पर प्रकाश डाला। विभिन्न संवैधानिक उपबंधों का उल्लेख करते हुए उन्होंने ने कहा कि भारतीय संविधान अपने प्रारंभ से ही लैंगिक समानता एवं न्याय के प्रति सचेष्ट रहा है। विशाखा केस, निर्भया केस इत्यादि का वर्णन करते हुए नारी अधिकारों एवं लैंगिक न्याय के क्षेत्र में न्यायालयों की भूमिका को भी उन्होंने उजागर किया।

महिलाओं को शिक्षित करें तभी होगा अधिकारों का बोध-न्यायमूर्ति चौहान

महिला अस्मिता की रक्षा एवं लैंगिक न्याय से संबंधित विभिन्न कानूनों जैसे कि उत्तराधिकार अधिनियम, घरेलू हिंसा निरोधक कानून, दहेज निरोधक कानून, महिला एवं बाल कल्याण नीति, जननी सुरक्षा योजना इत्यादि के बारे में भी उन्होंने विस्तार से बताया और कहा कि महिलाओं को इन कानूनों एवं प्रावधानों के प्रति शिक्षित करने की आवश्यकता है, साथ ही इनके दुरुपयोग को भी रोकने की आवश्यकता है जिससे हर उस नारी को न्याय प्राप्त हो सके। महिलाओं की शिक्षा के महत्व को उजागर करते हुए उन्होंने कहा कि एक स्त्री जब शिक्षित होती है तो वह पूरे परिवार एवं पीढ़ी को शिक्षित करती है।उन्होंने कहा कि लैंगिक समानता के क्षेत्र में बहुत कुछ किया गया है और बहुत कुछ करने की भी आवश्यकता है।

इसी क्रम में उन्होंने उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय द्वारा इस महवत्पूर्ण विषय पर व्याख्यान आयोजित करने पर हर्ष प्रकट किया तथा यह आशा व्यक्त किया कि इस विषय पर और अधिक चर्चा-परिचर्चा की जाएगी जिससे सम्पूर्ण समाज इस विषय पर जागरूक हो।अंत में उन्होंने "यत्र नार्यन्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवता" के साथ अपना उद्बोधन समाप्त किया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे कुलसचिव डॉ अरुण कुमार गुप्ता ने भी महिलाओं के अधिकारों की बात के साथ-साथ उनमें जागरूकता पर विशेष बल दिया। डॉ. गुप्ता ने बताया कि भारतीय संविधान धर्म जाति के आधार पर भेदभाव नहीं करता बल्कि महिलाओं को संरक्षण प्रदान करता है। संविधान में समान कार्य के लिए समान वेतन ,कार्यों का निश्चित समय आदि अन्य कानून भी हैं। उन्होंने कहा कि समाज की सोच बदलनी होगी और बहू बेटियों को समान अधिकार देने होंगे। भारतीय संविधान में 73वां - 74वां संविधान संशोधन कर पंचायती चुनाव में महिलाओं की भागीदारी भी सुनिश्चित किया गया है। आज अंतर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय स्तर पर महिलाएं प्रतिनिधित्व कर रही हैं।

अंत में राजनीति विज्ञान के उपाचार्य डॉ. आनन्दा नन्द त्रिपाठी ने मुख्य अतिथि एवं अन्य प्रतिभागियों का धन्यवाद ज्ञापन किया। तत्पश्चात राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए आयोजन सचिव
डॉ. त्रिविक्रम तिवारी

कार्यक्रम का संचालन समाज विज्ञान विद्याशाखा के सहायक निदेशक/ सहायक आचार्य एवं कार्यक्रम के आयोजन सचिव डॉ. त्रिविक्रम तिवारी ने किया।

इस कार्यक्रम में सभी विद्याशाखा के निदेशक, प्रोफेसर, एसोसिएट प्रोफेसर, असिस्टेंट प्रोफेसर, शैक्षणिक परामर्शदाता एवं सभी अध्ययन केंद्र के प्रभारी परामर्शदाता तथा अन्य छात्र-छात्राओं ने प्रतिभाग किया।

मित्रता दिवस की पूर्व संध्या पर आयोजित एक दिवसीय व्याख्यान

Women's Issues-Accessing Law for Empowerment

दिनांक : 31 जुलाई 2021

व्याख्यान रिपोर्ट

संयोजक : प्रो.(डॉ.) संतोषा कुमार

सह–संयोजक : डॉ. आनन्दा नन्द त्रिपाठी
डॉ. संजय कुमार सिंह

समन्वयक : डॉ. सुनील कुमार
डॉ. त्रिविक्रम तिवारी

आयोजन सचिव : श्री रमेश चन्द्र यादव

समाजशास्त्र
समाज विज्ञान विद्याशाखा
उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय में मित्रता दिवस की पूर्व संध्या पर एक दिवसीय व्याख्यान "Women's Issues-Accessing Law for Empowerment" विषय पर सफलता पूर्वक आयोजित किया गया।

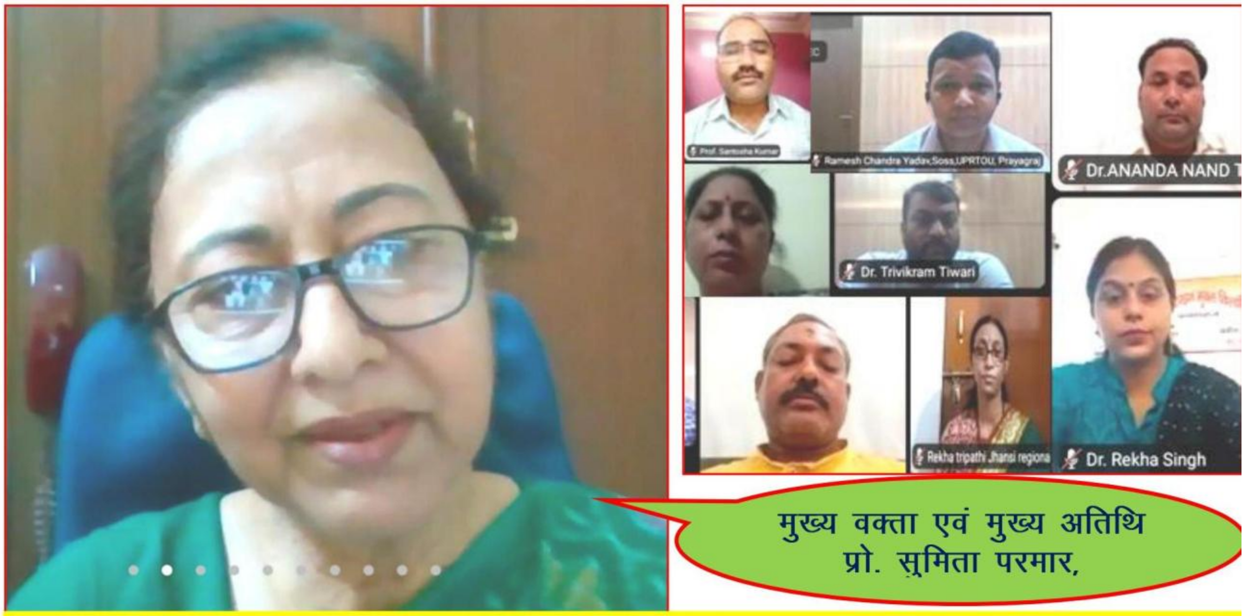

ज़ीरो टॉलरेंस से कम होंगे यौन उत्पीड़न के केस. प्रोफेसर परमार

व्याख्यान की मुख्य वक्ता/मुख्य अतिथि प्रो. सुमिता परमार, पूर्व निदेशक, महिला अध्ययन केन्द्र, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज ने यौन उत्पीड़न अधिनियम –2013 के विभिन्न पहलुओं पर विस्तृत प्रकाश डाला। प्रो. परमार ने विश्व में महिला उत्पीडन की शुरूआत 1970 में किस प्रकार से अमेरिका में हुई। तत्पश्चात भारत में किस प्रकार से यौन उत्पीडन अधिनियम का निर्माण हुआ पर विस्तृत प्रकाश डाला। भॅवरी देवी केस के माध्यम से यौन उत्पीड़न अधिनियम के विकास पर विस्तार से चर्चा की गई।

माननीया कुलपति प्रो. सीमा सिंह

महिला सशक्तिकरण के लिए शिक्षा ही प्रमुख अस्त्र – प्रो. सीमा सिंह

माननीया कुलपति प्रो. सीमा सिंह जी ने महिलाओं में साहस एवं जागरूकता का होना आवश्यक बताया तथा शिक्षा को महिला सशक्तिकरण के लिए प्रमुख औजार तथा शिक्षा से ही सम्भव होगा महिला सशक्तिकरण पर विशेष जोर दिया। मा. कुलपति जी ने महिलाओं में अधिनियम के प्रति जारूकता फैलाने की बात कही।

एक दिवसीय व्याख्यान में अतिथियों का वाचिक स्वागत व्याख्यान के संयोजक प्रो. संतोषा कुमार, प्रभारी निदेशक समाज विज्ञान विद्याशाखा ने किया।

कार्यक्रम का संचालन व्याख्यान के आयोजन सचिव श्री रमेश चन्द्र यादव द्वारा किया गया।

धन्यवाद ज्ञापन करते हुए सह–संयोजक डॉ. संजय कुमार सिंह

धन्यवाद ज्ञापन सह–संयोजक डॉ. संजय कुमार सिंह ने किया।

कार्यक्रम के दौरान विश्वविद्यालय के समस्त निदेशक, समस्त प्रोफेसर, एसो. प्रोफेसर, असिं. प्रोफेसर, समस्त शैक्षणिक परामर्शदाता एवं समाज विज्ञान विद्याशाखा के डॉ. आनन्दा नन्द त्रिपाठी, डॉ. सुनील कुमार, डॉ. त्रिविक्रम तिवारी, डॉ. दीपशिखा श्रीवास्तव, डॉ. अलका वर्मा एवं श्री मनोज कुमार आदि उपस्थित रहे।

रयागराज, रविवार
1 अगस्त, 2021
गर संस्करण
मूल्य ₹ 7.00
पृष्ठ 18+4=22

दैनिक जागरण

www.jagran.com

असहयोग आंदोलन की कामयाबी का गवाह है यह स्कूल 15

लोगों में पुलिस के प्रति नकारात्मक धारणा को बदलें : मोदी 15

जीरो टालरेंस से कम होगा यौन उत्पीड़न : प्रो. परमार

जासं, प्रयागराज : उप्र राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय में 'कानून तक पहुंच, महिला सशक्तिकरण की पूर्व शर्त' विषयक आनलाइन व्याख्यान का आयोजन किया गया। इवि के महिला अध्ययन केंद्र की पूर्व निदेशक प्रोफेसर सुमिता परमार ने कहा कि सभी विभागों में जीरो टॉलरेंस की नीति अपनाई जाए तो यौन उत्पीड़न के केस में कमी आ सकती है। कुलपति प्रो. सीमा सिंह ने कहा कि महिलाओं में जागरूकता का होना आवश्यक है। स्वागत प्रो. एस कुमार और संचालन रमेश चंद्र यादव व धन्यवाद डा. संजय कुमार सिंह ने ज्ञापित किया।

मुविवि में मृतक आश्रित कोटे में नियुक्ति : उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय की कुलपति प्रोफेसर सीमा सिंह ने शनिवार को मृतक आश्रित कोटे में रूबी सोनकर को कनिष्ठ सहायक के पद पर नियुक्ति पत्र प्रदान की। वह विवि में कनिष्ठ सहायक के पद पर कार्यरत रहे अशोक चौधरी की पत्नी हैं। अशोक का निधन 23 मई 2020 को हो गया था। कुलपति के संज्ञान में मृतक आश्रित कोटे का मामला आया तो उन्होंने नियुक्ति का निर्णय लिया।

DAVP से विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

मेंहदावल मेल

वर्ष-9 अंक-299 संतकबीरनगर, रविवार, 01 अगस्त 2021 पृष्ठ-4 मूल्य -1/- (R.N.I NO. : UPHIN/2012

जीरो टॉलरेंस से कम होंगे यौन उत्पीड़न के केस- प्रोफ़ेसर परमार

मुक्त विश्वविद्यालय में हुआ व्याख्यान का आयोजनन

मेंहदावल मेल समाचार

प्रतापगढ़। उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय में 'कानून तक पहुंच, महिला सशक्तिकरण की पूर्व शर्त' विषय पर ऑनलाइन व्याख्यान सफलतापूर्वक आयोजित किया गया। समाज विज्ञान विद्या शाखा द्वारा आयोजित व्याख्यान की मुख्य वक्ता एवं मुख्य अतिथि प्रोफ़ेसर सुमिता परमार, पूर्व निदेशक, महिला अध्ययन केंद्र, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज ने कहा कि अगर सभी विभागों में जीरो टॉलरेंस की नीति अपनाई जाए तो उससे यौन उत्पीड़न के केस में कमी आ सकती है। इसके लिए संस्था में उच्च पद से लेकर निम्न वर्ग के कर्मचारी तक एक ही नीति का पालन कराया जाना आवश्यक है। उन्होंने यौन उत्पीड़न अधिनियम 2013 के विभिन्न पहलुओं पर विस्तृत प्रकाश डाला।

उन्होंने बताया कि विश्व में 1970 में सर्वप्रथम अमेरिका में महिला उत्पीड़न शब्द की शुरुआत फारले द्वारा की गई। उन्होंने विस्तार पूर्वक महिला उत्पीड़न के प्रकारों तथा उनसे बचने के उपाय पर महत्वपूर्ण चर्चा की। साथ ही भारत में किस प्रकार से यौन उत्पीड़न अधिनियम का निर्माण हुआ, इस पर विस्तार से प्रकाश डाला। प्रोफेसर परमार ने अनीता हिल केस, विशाखा केस, मेधा कोटवाल केस तथा भंवरी देवी केस के माध्यम से यौन उत्पीड़न अधिनियम के विकास पर विस्तार से चर्चा की।

प्रोफ़ेसर परमार ने सरकारी योजनाओं तथा सरकार द्वारा किए जा रहे प्रयासों तथा यौन उत्पीड़न अधिनियम के सभी बिंदुओं पर ध्यान आकर्षित करते हुए सही ढंग से लागू किए जाने के प्रयासों पर जोर दिया।

अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रोफ़ेसर सीमा सिंह ने कहा कि महिलाओं में साहस एवं जागरूकता का होना अत्यंत आवश्यक है। महिला सशक्तिकरण के लिए शिक्षा ही प्रमुख अस्त्र है। महिलाओं को शिक्षित करना ही महिला सशक्तिकरण की दिशा में एक सकारात्मक कदम होगा।

कुलपति ने महिलाओं में अधिनियम के प्रति जागरूकता फैलाने की बात कही। एक दिवसीय व्याख्यान में अतिथियों का वार्षिक स्वागत व्याख्यान के संयोजक प्रोफ़ेसर एस कुमार ने किया। कार्यक्रम का संचालन व्याख्यान के आयोजन सचिव श्री रमेश चंद्र यादव तथा धन्यवाद ज्ञापन संयोजक डॉ संजय कुमार सिंह ने किया। व्याख्यान के दौरान समाज विज्ञान विद्या शाखा के डॉ आनंदानंद त्रिपाठी,श्री सुनील कुमार, डॉ त्रिविक्रम तिवारी, डॉ दीपशिखा श्रीवास्तव , डॉ अलका वर्मा,श्री मनोज कुमार एवं विश्वविद्यालय के समस्त निदेशक,प्रोफ़ेसर, एसोसिएट प्रोफ़ेसर, असिस्टेंट प्रोफ़ेसर तथा शैक्षणिक परामर्शदाता आदि ऑनलाइन जुड़े रहे।

हिन्दी दैनिक
इलाहाबाद एक्सप्रेस
वर्ष : 12 अंक : 123, प्रयागराज, रविवार 01 अगस्त 2021, पृष्ठ 8, मूल्य 1 रुपया
सच का आधार

जीरो टॉलरेंस से कम होंगे यौन उत्पीड़न के केस : प्रो परमार

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय में 'कानून तक पहुंच, महिला सशक्तिकरण की पूर्व शर्त' विषय पर ऑनलाइन व्याख्यान आयोजित किया गया। मुख्य अतिथि प्रो. सुमिता परमार, पूर्व निदेशक, महिला अध्ययन केंद्र, इलाहाबाद विश्वविद्यालय ने कहां कि अगर सभी विभागों में जीरो टॉलरेंस की नीति अपनाई जाए तो उससे यौन उत्पीड़न के केस में कमी आ सकती है।

समाज विज्ञान विद्या शाखा द्वारा आयोजित व्याख्यान की मुख्य वक्ता ने कहा कि इसके लिए संस्था में उच्च पद से लेकर निम्न वर्ग के कर्मचारी तक एक ही नीति का पालन कराया जाना आवश्यक है। उन्होंने यौन उत्पीड़न अधिनियम 2013 के विभिन्न पहलुओं पर विस्तृत प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि विश्व में 1970 में सर्वप्रथम अमेरिका में महिला उत्पीड़न शब्द की शुरुआत फारले द्वारा की गई। उन्होंने महिला उत्पीड़न के प्रकारों तथा उनसे बचने के उपाय पर महत्वपूर्ण चर्चा की। साथ ही भारत

में किस प्रकार से यौन उत्पीड़न अधिनियम का निर्माण हुआ, इस पर प्रकाश डाला।

प्रो परमार ने अनीता हिल केस, विशाखा केस, मेधा कोटवाल केस तथा भंवरी देवी केस के माध्यम से यौन उत्पीड़न अधिनियम के विकास पर चर्चा की। उन्होंने सरकारी योजनाओं तथा सरकार द्वारा किए जा रहे प्रयासों तथा यौन उत्पीड़न अधिनियम के सभी बिंदुओं पर ध्यान आकर्षित करते हुए सही ढंग से लागू किए जाने के प्रयासों पर जोर दिया।

अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो सीमा सिंह ने कहा कि महिलाओं में साहस एवं जागरूकता का होना अत्यंत आवश्यक है। महिला सशक्तिकरण के लिए शिक्षा ही प्रमुख अस्त्र है। महिलाओं को शिक्षित करना ही महिला सशक्तिकरण की दिशा में एक सकारात्मक कदम होगा। व्याख्यान के संयोजक प्रो एस कुमार एवं संचालन व्याख्यान के आयोजन सचिव रमेश चंद्र यादव तथा धन्यवाद ज्ञापन संयोजक डॉ संजय कुमार सिंह ने किया। इस दौरान समाज विज्ञान विद्या शाखा के डॉ आनंदानंद त्रिपाठी, सुनील कुमार, डॉ त्रिविक्रम तिवारी, डॉ दीपशिखा श्रीवास्तव, डॉ अलका वर्मा, मनोज कुमार एवं विश्वविद्यालय के समस्त निदेशक, प्रोफेसर, एसोसिएट प्रोफेसर, असिस्टेंट प्रोफेसर आदि ऑनलाइन जुड़े रहे।

वर्ष : 27 | अंक : 271
प्रतापगढ़ | रविवार , 1 अगस्त-2021
पृष्ठ : 8 | मूल्य : 3 रुपये

दैनिक लोकमित्र सच्चाई की जंग

जीरो टॉलरेंस से कम होंगे यौन उत्पीड़न के केस: प्रोफेसर परमार

लोकमित्र ब्यूरो

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय में %कानून तक पहुंच, महिला सशक्तिकरण की पूर्व शर्त% विषय पर ऑनलाइन व्याख्यान सफलतापूर्वक आयोजित किया गया। समाज विज्ञान विद्या शाखा द्वारा आयोजित व्याख्यान की मुख्य वक्ता एवं मुख्य अतिथि प्रोफेसर सुमिता परमार, पूर्व निदेशक, महिला अध्ययन केंद्र, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज ने कहां कि अगर सभी विभागों में जीरो टॉलरेंस की नीति अपनाई जाए तो उससे यौन उत्पीड़न के केस में कमी आ सकती है। इसके लिए संस्था में उच्च पद से लेकर निम्न वर्ग के कर्मचारी तक एक ही नीति का पालन कराया जाना आवश्यक है। उन्होंने यौन उत्पीड़न अधिनियम 2013 के विभिन्न पहलुओं पर विस्तृत प्रकाश डाला।उन्होंने बताया कि विश्व में 1970 में सर्वप्रथम अमेरिका में महिला उत्पीड़न शब्द की शुरुआत फारले द्वारा की गई। उन्होंने विस्तार पूर्वक महिला उत्पीड़न के प्रकारों तथा उनसे बचने के उपाय पर महत्वपूर्ण चर्चा की। साथ ही भारत में किस प्रकार से यौन उत्पीड़न अधिनियम का निर्माण हुआ, इस पर विस्तार से प्रकाश डाला। प्रोफेसर परमार ने अनीता हिल केस, विशाखा केस, मेधा कोटवाल केस तथा भंवरी देवी केस के माध्यम से यौन उत्पीड़न अधिनियम के विकास पर विस्तार से चर्चा की।प्रोफेसर परमार ने सरकारी योजनाओं तथा सरकार द्वारा किए जा रहे प्रयासों तथा यौन उत्पीड़न अधिनियम के सभी बिंदुओं पर ध्यान आकर्षित करते हुए सही ढंग से लागू किए जाने के प्रयासों पर जोर दिया। अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रोफेसर सीमा सिंह ने कहा कि महिलाओं में साहस एवं जागरूकता का होना अत्यंत आवश्यक है। महिला सशक्तिकरण के लिए शिक्षा ही प्रमुख अस्त्र है। महिलाओं को शिक्षित करना ही महिला सशक्तिकरण की दिशा में एक सकारात्मक कदम होगा। कुलपति ने महिलाओं में अधिनियम के प्रति जागरूकता फैलाने की बात कही। एक दिवसीय व्याख्यान में अतिथियों का वार्षिक स्वागत व्याख्यान के संयोजक प्रोफेसर एस कुमार ने किया। कार्यक्रम का संचालन व्याख्यान के आयोजन सचिव रमेश चंद्र यादव तथा धन्यवाद ज्ञापन संयोजक डॉ संजय कुमार सिंह ने किया। व्याख्यान के दौरान समाज विज्ञान विद्या शाखा के डॉ आनंदानंद त्रिपाठी, सुनील कुमार, डॉ त्रिविक्रम तिवारी, डॉ दीपशिखा श्रीवास्तव , डॉ अलका वर्मा, मनोज कुमार एवं विश्वविद्यालय के समस्त निदेशक,प्रोफेसर, एसोसिएट प्रोफेसर, असिस्टेंट प्रोफेसर तथा शैक्षणिक परामर्शदाता आदि ऑनलाइन जुड़े रहे।

दैनिक कर्मठ

राष्ट्रीय एकता के प्रति समर्पित

प्रयागराज, रविवार , 01 अगस्त 2021 विक्रम संवत 2076 प्रातः संस्करण ईमेल -dainikkarmath@gmail.com पृष्ठ : 08

जीरो टॉलरेंस से कम होंगे यौन उत्पीड़न के केस- प्रोफेसर परमार

मुक्त विश्वविद्यालय में हुआ व्याख्यान का आयोजन

प्रयागराज।उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय में श्कानून तक पहुंच, महिला सशक्तिकरण की पूर्व शर्तश विषय पर ऑनलाइन व्याख्यान सफलतापूर्वक आयोजित किया गया। समाज विज्ञान विद्या शाखा द्वारा आयोजित व्याख्यान की मुख्य वक्ता एवं मुख्य अतिथि प्रोफेसर सुमिता परमार, पूर्व निदेशक, महिला अध्ययन केंद्र, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज ने कहां कि अगर सभी विभागों में जीरो टॉलरेंस की नीति अपनाई जाए तो उससे यौन उत्पीड़न के केस में कमी आ सकती है। इसके लिए संस्था में उच्च पद से लेकर निम्न वर्ग के कर्मचारी तक एक ही नीति का पालन कराया जाना आवश्यक है। उन्होंने यौन उत्पीड़न अधिनियम 2013 के विभिन्न पहलुओं पर विस्तृत प्रकाश डाला।

उन्होंने बताया कि विश्व में 1970 में सर्वप्रथम अमेरिका में महिला उत्पीड़न शब्द की शुरुआत फारले द्वारा की गई। उन्होंने विस्तार पूर्वक महिला उत्पीड़न के प्रकारों तथा उनसे बचने के उपाय पर महत्वपूर्ण चर्चा की। साथ ही भारत में किस प्रकार से यौन उत्पीड़न अधिनियम का निर्माण हुआ, इस पर विस्तार से प्रकाश डाला। प्रोफेसर परमार ने अनीता हिल केस, विशाखा केस, मेधा कोटवाल केस तथा भंवरी देवी केस के माध्यम से यौन उत्पीड़न अधिनियम के विकास पर विस्तार से चर्चा की। प्रोफेसर परमार ने सरकारी योजनाओं तथा सरकार द्वारा किए जा रहे प्रयासों तथा यौन उत्पीड़न अधिनियम के सभी बिंदुओं पर ध्यान आकर्षित करते हुए सही ढंग से लागू किए जाने के प्रयासों पर जोर दिया। अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रोफेसर सीमा सिंह ने कहा कि महिलाओं में साहस एवं जागरूकता का होना अत्यंत आवश्यक है। महिला सशक्तिकरण के लिए शिक्षा ही प्रमुख अस्त्र है। महिलाओं को शिक्षित करना ही महिला सशक्तिकरण की दिशा में एक सकारात्मक कदम होगा। कुलपति ने महिलाओं में अधिनियम के प्रति जागरूकता फैलाने की बात कही। एक दिवसीय व्याख्यान में अतिथियों का वार्षिक स्वागत व्याख्यान के संयोजक प्रोफेसर एस कुमार ने किया। कार्यक्रम का संचालन व्याख्यान के आयोजन सचिव श्री रमेश चंद्र यादव तथा धन्यवाद ज्ञापन संयोजक डॉ संजय कुमार सिंह ने किया। व्याख्यान के दौरान समाज विज्ञान विद्या शाखा के डॉ आनंदानंद त्रिपाठी,श्री सुनील कुमार, डॉ त्रिविक्रम तिवारी, डॉ दीपशिखा श्रीवास्तव , डॉ अलका वर्मा,श्री मनोज कुमार एवं विश्वविद्यालय के समस्त निदेशक,प्रोफेसर, एसोसिएट प्रोफेसर, असिस्टेंट प्रोफेसर तथा शैक्षणिक परामर्शदाता आदि ऑनलाइन जुड़े रहे।

www.sahajsatta.in

facebook.com/sahajsatta.allahabad

सहजसत्ता

वर्ष 14 अंक 46
पृष्ठ-8
प्रयागराज
रविवार, 01 अगस्त, 2021
मूल्य 1.00 रुपये मात्र

सत्य की सत्ता को समर्पित

जीरो टॉलरेंस से कम होंगे यौन उत्पीड़न के केसः प्रो परमार

प्रयागराज(नि.सं.)। उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय में 'कानून तक पहुंच, महिला सशक्तिकरण की पूर्व शर्त' विषय पर ऑनलाइन व्याख्यान आयोजित किया गया। मुख्य अतिथि प्रो. सुमिता परमार, पूर्व निदेशक, महिला अध्ययन केंद्र, इलाहाबाद विश्वविद्यालय ने कहां कि अगर सभी विभागों में जीरो टॉलरेंस की नीति अपनाई जाए तो उससे यौन उत्पीड़न के केस में कमी आ सकती है।

समाज विज्ञान विद्या शाखा द्वारा आयोजित व्याख्यान की मुख्य वक्ता ने कहा कि इसके लिए संस्था में उच्च पद से लेकर निम्न वर्ग के कर्मचारी तक एक ही नीति का पालन कराया जाना आवश्यक है। उन्होंने यौन उत्पीड़न अधिनियम 2013 के विभिनन्‍ पहलुओं पर विस्तृत प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि विश्व में 1970 में सर्वप्रथम अमेरिका में महिला उत्पीड़न शब्द की शुरुआत फारले द्वारा की गई। उन्होंने महिला उत्पीड़न के प्रकारों तथा उनसे बचने के उपाय पर महत्वपूर्ण चर्चा की। साथ ही भारत में किस प्रकार से यौन उत्पीड़न अधिनियम का निर्माण हुआ, इस पर प्रकाश डाला।

प्रो परमार ने अनीता हिल केस, विशाखा केस, मेधा कोटवाल केस तथा भंवरी देवी केस के माध्यम से यौन उत्पीड़न अधिनियम के विकास पर चर्चा की। उन्होंने सरकारी योजनाओं तथा सरकार द्वारा किए जा रहे प्रयासों तथा यौन उत्पीड़न अधिनियम के सभी बिंदुओं पर ध्यान आकर्षित करते हुए सही ढंग से लागू किए जाने के प्रयासों पर जोर दिया। अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो सीमा सिंह ने कहा कि महिलाओं में साहस एवं जागरूकता का होना अत्यंत आवश्यक है। महिला सशक्तिकरण के लिए शिक्षा ही प्रमुख अस्त्र है। महिलाओं को शिक्षित करना ही महिला सशक्तिकरण की दिशा में एक सकारात्मक कदम होगा। व्याख्यान के संयोजक प्रो एस कुमार एवं संचालन व्याख्यान के आयोजन सचिव रमेश चंद्र यादव तथा धन्यवाद ज्ञापन संयोजक डॉ संजय कुमार सिंह ने किया। इस दौरान समाज विज्ञान विद्या शाखा के डॉ आनंदानंद त्रिपाठी, सुनील कुमार, डॉ त्रिविक्रम तिवारी, डॉ दीपशिखा श्रीवास्तव, डॉ अलका वर्मा, मनोज कुमार एवं विश्वविद्यालय के समस्त निदेशक, प्रोफेसर, एसोसिएट प्रोफेसर, असिस्टेंट प्रोफेसर आदि ऑनलाइन जुड़े रहे।

चतुर्दश दीक्षान्त समारोह विशेष व्याख्यान

भारत में मानवाधिकार : दशा एवं दिशा

दिनांक : 23 नवम्बर 2019

व्याख्यान रिपोर्ट

निदेशक : प्रो.(डॉ.) सुधांशु त्रिपाठी

संयोजक : डॉ. त्रिविक्रम तिवारी

राजनीति विज्ञान

समाज विज्ञान विद्याशाखा

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय के समाज विज्ञान विद्याशाखा के तत्वाधान में दिनांक 23/11/2019 का चतुर्दश दीक्षान्त समारोह विशेष व्याख्यानमाला के अंतर्गत ''भारत में मानवाधिकार : दशा एवं दिशा'' विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया।

व्याख्यान में मुख्य वक्ता/मुख्य अतिथि के रूप में माननीय न्यायमूर्ति श्री रण विजय सिंह (से.नि.), अध्यक्ष, अपीलीय प्राधिकरण, प्रवेश एवं फीस नियमन, निजी प्राविधिक शैक्षणिक संस्थायें, उ.प्र., उपस्थित रहे तथा कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. कामेश्वर नाथ सिंह, माननीय कुलपति, उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय ने की ।

कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि एवं मा. कुलपति जी द्वारा मॉ सरस्वती जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्जवलन से हुआ। साथ ही विद्याशाखा के शिक्षकों द्वारा राष्ट्रगीत प्रस्तुत किया गया। तत्पश्चात मुख्य अतिथि, माननीय कुलपति जी एवं प्रभारी निदेशक, समाज विज्ञान विद्याशाखा को पुष्प गुच्छ प्रदान कर उनका स्वागत किया गया।

वाचिक स्वागत करते हुए समाज विज्ञान विद्याशाखा के प्रभारी निदेशक ने मुख्य अतिथि का परिचय प्रस्तुत किया। तत्पश्चात मा0 कुलपति जी द्वारा मुख्य अतिथि को प्रतीक चिन्ह एवं अंगवस्त्र प्रदान कर तथा प्रभारी निदेशक द्वारा मा. कुलपति महोदय को प्रतीक चिन्ह एवं अंगवस्त्र देकर स्वागत किया गया। स्वागत के पश्चात मुख्य अतिथि/मुख्य वक्ता श्री रणविजय सिंह को व्याख्यान हेतु निवेदित किया गया।

अपने वक्तव्य में श्री सिंह ने भारत में मानवाधिकार के सैद्धान्तिक एवं व्यवहारिक दोनों पक्षों को प्रस्तुत किया। मानवाधिकार के संदर्भ में संवैधानिक उपबन्धों की चर्चा करते हुए श्री सिंह ने उपबन्धों के पर्याप्त होने की बात कही। अन्तर्राष्ट्रीय संदर्भो में मानवाधिकार के उद्भव एवं विकास की चर्चा करते हुए श्री सिंह ने कहा कि वैश्विक स्तर पर मानवाधिकार की चर्चा आवश्यक थी, परन्तु भारतीय संस्कृति की विशेषता यह है कि भारतीय चिन्तन में सदैव से मानवाधिकार उपस्थित था। अपितु भारतीय संस्कृति मानवाधिकार से अधिक मानव कर्तव्य से ओत–प्रोत थी, यही कारण है कि भारत में पैदा हुआ बालक प्रारम्भ से ही अपने लालन–पालन के कारण इस संदर्भ में सजग रहा है। परन्तु वर्तमान की पाश्चात्यानुकरण की प्रवृति ने इसमें गिरावट पैदा कर दी है। सभी व्यक्तिवाद की चपेट में है। अधिकार मुख्य हो गये हैं, कर्तव्य गौड़ तथा सामाजिक चिन्तन समाप्त हो गया है। यह पतन सिर्फ किसी एक क्षेत्र तक सीमित नहीं है। पारिवारिक ढ़ाचा तहस–नहस हो गया है तथा सम्बन्धों की गरिमा गिरी है। प्रशासन में भ्रष्टाचार है। यहॉ

तक की न्याय एवं शिक्षा जगत भी इससे अछूते नहीं रहे। निष्कर्षतः माननीय न्यायमूर्ति ने मानवाधिकार की वर्तमान दशा चिन्तनीय बताई।

भारत में मानवाधिकार की दिशा की चर्चा करते हुए मुख्य वक्ता ने कहा कि वर्तमान चिन्तनीय दशा को देखते हुए दिशा बदलने की महती आवश्यकता है। हमें स्वयं को कर्तव्यबोध से युक्त करना होगा। कर्तव्य स्वयं में अधिकारों की गारन्टी है। व्यक्तिवाद से ऊपर उठ कर हमें समष्टिवाद की ओर चलना होगा। यह सामाजिक चिन्तन से संभव होगा। पाश्चात्यानुकरण को छोड़ अपनी संस्कृति से जुड़ना होगा तथा भावी पीढ़ी में सांस्कृतिक जड़ों को मजबूत करना होगा।

अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में माननीय कुलपति महोदय ने कहा कि मनुष्य की जीवन दृष्टि सर्व समावेशी होनी चाहिए, जिसमें जीवन के सभी पक्ष समाहित हो भारतीय संस्कृति इसका प्रतिमान है, अतः भारतीय संस्कृति को पाश्चात्य चश्में से नहीं देखा जा सकता। मानव जीवन की समस्त समस्याओं का समाधान भारतीय पद्धति में उपस्थित है, अतः भारतीय संस्कृति में ही मानव भविष्य सुरक्षित है। आवश्यकता है कि भविष्य की पीढ़ी को संस्कारित किया जाए ताकि समाजहित एवं राष्ट्रहित की सर्वोच्चता बनी रहे। इसके लिए हमें अपने अन्तः करण में झॉकने की आवश्यकता है, अपने दायित्व का बोध करने की

आवश्यकता है। व्यक्ति के बिना बदले कुछ नहीं बदलने पाला है। व्यक्ति निर्माण से ही राष्ट्र निर्माण का मार्ग प्रशस्त होता है और यह कानून द्वारा नहीं अपितु संस्कृति के ाध्यम से ही संभव है।

कार्यकम के अन्त में इतिहास विभाग के उपाचार्य डॉ. संतोषा कुमार ने धन्यवाद ज्ञापित किया। तत्पश्चात राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। कार्यक्रम का संचालन श्री रमेश चन्द्र यादव, शैक्षणिक परामर्शदाता, समाजशास्त्र ने किया। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. त्रिविक्रम तिवारी, सहायक निदेशक/सहायक आचार्य, समाज विज्ञान विद्याशाखा रहे। कार्यक्रम के दौरान प्रो. आर.पी.एस. यादव, प्रो. पी.पी. दूबे, प्रो. जी. एस. शुक्ला, प्रो. ओमजी गुप्ता, प्रो. पी. के. पाण्डेय, डॉ. विनोद कुमार गुप्ता, श्री सुनील कुमार, डॉ. अतुल कुमार मिश्रा, श्री मनोज कुमार आदि लोग उपस्थित रहे।

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

राष्ट्रीय संगोष्ठी

विषय – भूमण्डलीकरण एवं गॉधी चिन्तन

दिनांक – 30.01.2018

<u>संगोष्ठी का प्रतिवेदन</u>

आयोजक

समाज विज्ञान विद्याशाखा,
उ.प्र. राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय,इलाहाबाद

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद के तत्वाधान में समाज विज्ञान विद्याशाखा द्वारा राष्ट्रपिता महात्मा गॉधी की 71 वीं पुण्यतिथि के अवसर पर भूमण्डलीकरण एवं गॉधी चिन्तन विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन दिनांक 30/01/2018 को विश्वविद्यालय के शैक्षणिक परिसर स्थित लोकमान्य तिलक शास्त्रार्थ सभागार में आयोजित किया गया।
मा. कुलपति तथा सभी अतिथियों द्वारा दीप प्रजज्वलन कर एवं मॉ सरस्वती की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर कार्यक्रम का औपचारिक शुभारम्भ किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मा. न्यायमूर्ति श्री कृष्ण मुरारी जी उच्च न्यायालय, इलाहाबाद ने कहा कि यह विषय अत्यन्त प्रासंगिक है। और संसार मुट्ठी में समा सा गया है। नैतिक मूल्य हाशिये पर है । बढ़ती हुई हिंसा इसका उदाहरण है। विकास के नाम पर प्रकृति का विनाश किया जा रहा है। कालजीवी होकर ही कालजयी हुआ जा सकता है। परिस्थतियों की जटिलताओं ने गॉधी जी को महत्वपूर्ण बना दिया है। विश्व में शान्ति स्थापित करने के लिए गॉधी अध्ययन महत्वपूर्ण हो गया है। गॉधी ने कर्मनिष्ठ व्यक्ति के रूप में सभी समस्याओं को सुलझाने का प्रयास किया तथा चिन्तन पर आधारित कर्म भी किया है। इस संगोष्ठी में इस विषय पर गहन चिन्तन किया जायेगा ऐसा विश्वास है।

मुख्य वक्ता प्रो. के. सी. पाण्डेय ने अपने उद्बोधन में कहा कि पूज्यनीय मोहनदास करमचन्द गॉधी का हे राम लोगों अर्थात मुसाफिर सफर को चला, सफर से लौट कर वतन को जाना ही ही मौत है। यह हे राम का आशय है। आगम को खुदा मत कहो आगम खुदा नहीं हो सकता परन्तु खुदा को खुदा को के नूर से कम भी नहीं हो सकता गॉधी के आभ्यान्तर के तेजस द्वारा जो कुछ चिन्तन है वही गॉधी चिन्तन है।
भारतीय चिन्तन में सुख में कुशलता कैसे है। सुख के स्थान पर सद्गुण कहने से सरलता है। नैतिकता और कुशलता भारतीय सुख के अवधारणा में गॉधी चिन्त में कैसे है तथा भूमण्डलीकरण में कैसे है। एक पूर्ण सद्गुणी चिन्तन गॉधी चिन्तन का लक्ष्य है। एक पूर्ण सद्गुणी चिन्तन को साकार रूप देने के लिए गॉधी चिन्तन की अवधारणा होती है। भूमण्डलीकरण में कुशलता अधिक तथा नैतिकता कम होती है। भूमण्डलीकरण में एक ऐसे समाज का निर्माण होगा जिसमें नैतिकता नाममात्र की होगी। बाजारीकरण से लोभी प्रवृत्ति बढ़ी है। मनुष्य का आपसी सम्बन्ध आर्थिक हो गया है। मनुष्य अकेला होता गया। ब्रिटेन में अकेलापन मंगालय बना। अकेलापन, परायापन, भूमण्डलीकरण की देन है। गॉधी जी दूसरे तरीके से स्टूटलेट सोसाइटी की ओर बढ़ते हैं। इसमें व्यक्ति

पृथककरण की स्थिति में शून्य में पहुँच जाता है। गॉधी चिन्तन में अधिकार की नहीं कर्तव्य की बात की जाती है। यह प्रश्न है कि जब औद्योगिकरण में आगे बढ़ने के बाद हम वापस कैसे लौटे ? परन्तु कहीं तो रूकना पडेगा, लौटना तो पडेगा। मार्श ने कहा कि मंदी , प्राकृतिक आपदा , साइबरक्राइम आदि के द्वारा जब थेडे लोग बेचेगें तो फिर गॉधी दर्शन की ओर लौटना पडेगा। गॉधी उत्तर आधुनिक विचारक हैं हर व्यक्ति का सत्य अलग–अलग है । गॉधी चिन्तन हरेक कर्तव्य की अन्तरात्मा पर बल देता है। भूमण्डलीकरण में अधिक उत्पादन करता है जिससे मनुष्य अनियंत्रित होता जाता जा रहा है। पर्यावरण असुतुलित होता जा रहा है।

मा. कुलपति प्रो. एम. पी. दुबे जी ने कहा कि द्वितीय विश्व के बाद तीन बातें मुख्यतः थी उनकी नीतिया भी एक सी होनी चाहिये। राज्य के द्वारा ही सारा विकास सम्भव है। यह चुनौती भूमण्डलीकरण के द्वारा है। गॉधी राज्य के विरोध में थे । भूमण्डलीकरण क्या है? किसे कहेगें। यह शब्द 1961 में सर्वप्रथम आया था। 1974 तक आलेखें में ही इसका प्रयोग हुआ। 1980 के दशक में इस शब्द का प्रयोग प्रत्येक पुस्तक , आलेख, पत्रिकाओं में हुआ।
जब दुनिया के अनेक समाज सीमा विहीन हो जाये उसे ग्लोबलाइजेशन माना गया। एक दुसरे के साथ जुड़ना अधिक होगा उतना अधिक ग्लोबलाइजेशन होगा। प्रक्रियाओं का अलग–अलग मतलब है। प्रत्येक विषय में ग्लोबलाइजेशन का अर्थ भिन्न–भिन्न है। जहॉ समाज एक दूसरे से जुड़ते जाए। ग्लोबलाइजेशन अलग–अलग तरह का है। संक्षेप में एक शब्द में कहना चाहें तो जब एक दिशा की बातें दूसरे जगह पहुँच जाये उसे ग्लोबलाइजेशल कहते हैं। बहुत कम नेता होते हैं जो राजनीति(स्ट्रैटजी) तथा अैक्टिस दोनों में माहिर हाते हैं । गॉधी जी इन दोनो में माहिर थे। गॉधी चिन्तन शांति अध्ययन के रूप में पूरे विश्व में फैला है।
कार्यक्रम के सारस्वत अतिथि प्रो. के. बी. पाण्डेय पूर्व कुलपति कानपुर विश्वविद्यालय,कानपुर जी ने कहा कि गॉधी न्याय, नैतिकता तथा सत्यनिष्ठा के धनी थे । उन्होने कहा कि गॉधी चिन्तन तथा भूमण्डलीकरण दोनो ही विषय में मैं छात्र के रूप में बैठना चाहता था। भारतीय चिन्तन कहता है कि व्यक्ति में ही क्यों प्रत्येक कण में खुदा का नूर है। भूमण्डलीकरण एक प्रश्न है कि सारे का प्राप्य क्या है पर हमारा लक्ष्य क्या है यदि पहले हम भूमण्डलीकरण से पहले यह चिन्तन कर लें कि हम भूमण्डलीकरण से क्या हमारा लक्ष्य पूर्ण होता है क्या आज का जो समाज है वह राजनीति से प्रभावित है। इसको देखकर साफ है कि दो चिन्तन है– गॉधी तथा नेहरू चिन्तन पर दोनो एक दूसरे

से बिल्कुल विपरीत हैं– हिन्द स्वराज। अनेक संस्मरणों के माध्यम से भूमण्डलीकरण तथा गंगा (पर्यावरण) के महत्व पर प्रकाश डाला। शिक्षा पर प्रकाश डाला। गॉधी जी ने स्पष्ट रूप से यह कहा था कि शिक्षा का व्यय भार उन्हें वहन करना चाहिए जिनके लिये तयार किया जाता है। हम सबके अन्दर गॉधी है। यह हम पर

निर्भर है कि हम गॉधी को कितना पोषित करते हैं। पूरी धरती पर हमारा ट्रस्टीशिप भी बताया था। वैश्वीकरण हमारी संस्कृति मे है। दूसरों को बचाकर अपनी आहूति देना ही वैश्वीकरण है। हमें वैश्विक दृष्टि से सोचना होगा। यू.एन.ओ. में सदस्यता का विस्तार होना चाहिए। पूॅजीवाद का विकल्प आवश्यक है। भारतवर्ष में अनेक देवता है किन्तु उनमें समन्वयवादी दृष्टिकोण है। हमारा चिन्तन ईश्वर से भी आगे है। मानसिक समन्वय है(एकं सत्विप्रा बहुधा वदन्ति) सामाजिक समन्वय ही सांस्कृतिक समन्वय ही वैश्वीकरण है। गॉधी जीवन की भाषण प्रतियोगिता नहीं अपितु जीने की प्रतियोगिता है।

प्रो. आर. पी. मिश्र पूर्व कुलपति इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद जी ने कहा कि हम लोगों ने वैश्वीकरण को एक डाटा के रूप में ग्रहण किया है। वैश्वीकरण यदि अच्छी चीजों का हो तो अत्यन्त श्रेष्ठ है। समस्याएं बढ़ रही हैं मानवता घट रही है। ऐसा कोई नियम बनाना चाहिए कि व्यक्तिगत संपत्ति सामान्य इनकम से 50 गुना से अधिक नहीं होना चाहिए। अब युग आ गया है कि हम गॉधी जी के बताये रास्ते पर चलें।

प्रो. राजेन्द्र प्रसाद, कुलपति, इलाहाबाद राज्य विश्वविद्यालय,जी ने कहा कि ग्लोबलाइजेशन एवं ग्लोबलाइटी शब्दों के बीच द्वंद है। बाजार को जोड़ने तथा खोलने की प्रक्रिया आर्थिकी से जुडी है निश्चित रूप से ग्लोबलाइजेशन के सकारात्मक तथा नकारात्मक दोनो पक्ष है। विकसित राष्ट्रो ंके लिए आर्थिकी के द्वारा शासन शुरू हुआ इनसे चैलेन्ज उत्पन्न हुए आज के समय में मनुष्य और समाज की स्थिति है। गॉधी जी नैतिकता विहीन मनुष्यता के पक्षधर नहीं थे जितनी कम आवश्यकताएं होगीं समाज उतना ही अच्छा होगा। गॉधी जी का मानना था कि प्रकृति ने मनुष्य की आवश्यकता के लिए पर्याप्त दिया है परन्तु लाभ के लिए नहीं । सबल यदि साधनों का दोहन कर लेता तो निर्बलों में अक्षमता बढ़ती जायेगी निर्बलों को भी बराबरी का मौका मिले।

मा. न्यायमूर्ति श्री सुधीर नारायण जी कहा कि गॉधी जी की विचारधारा को नये संदर्भ में देखना होगा। आपने काटेज इन्डस्ट्रीज पर विचार व्यक्त किये । आज की समस्याओं तथा गॉधी विचारधारा को मिलाकर ही वर्तमान की समस्याओं के उपयुक्त होगा। जब हम सभी एकात्मता को अपनायेगे तभी गॉधी चिन्तन सही मायने में सार्थक सिद्ध होगा।

मा. न्यायमूर्ति श्री गिरिधर मालवीय जी कहा कि गॉधी जी का मानना है कि धन का बराबर बॅटवारा किया जाना चाहिए। गॉधी जी ने सदैव व्यर्थ होने वाली वस्तुओं पर विशेष ध्यान दिया। उपयोग की वस्तुओं में मितव्यतता रखी। वे औद्योगीकरण के सदैव विरोधी रहे।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे प्रख्यात गॉधीवादी चिन्तक एवं पूर्व सांसद प्रो. रामजी सिंह जी ने कहा कि गॉधी जी का जीवन जितना महत्वपूर्ण था, बलिदान उससे भी अधिक महत्तर था । वे भारत से अधिक विश्व के बारे में

सोचते थे। जब एक पत्रकार ने गाँधी जी पूछा कि क्या विश्व एक नहीं हो सकता तो उन्होने कहा यदि विश्व एक नहीं हो सकता तो हमारे जीने की कोई सार्थकता नहीं है। यदि हम मित्र बनकर नहीं रह सकते हैं तो हमारा अस्तित्व समाप्त हो जायेगा।वैश्वीकरण तथा वैश्विकता में अन्तर है। आज विज्ञान की दृष्टि से भी वैश्विकता के बिना नहीं रह सकते। गाँधी जी का एक वाक्य मनुष्य के लिए पृथ्वी ने बहुत कुछ दिया है परन्तु लोभ, लालच के लिए नहीं। आज सचमुच में हम संकीर्णन में हमारा मानस विज्ञान के साथ नहीं चल रहा है। वैश्विक फैशन नहीं अनिवार्यता है परन्तु खोई हुई वैश्विकता न तो वैश्विकता ळे और न हीं वैश्विकरण। मारीच स्वर्णयुग को देखकर माता सीता को भी लोभ हो गया था। बाजारवाद उर्फ वैश्वीकरण क्या गंभीर नहीं है । जी 8, जी20 की बैठकों में कहा गया है कि अपने स्टैण्डर्ड को कम करो । संकीर्ण राष्ट्रीयता विज्ञान विरूद्ध तो है ही आध्यात्म विरूद्ध भी है। निजीकरण, उदारीकरण तथा वैश्वीकरण में से निजीकरण क्या है। गाँधी जी कहते थे कि सभी संपत्ति ईश्वर की है जब तक व्यक्तिगत संपत्ति का समापन नहीं होगा। उन्होने कहा कि गाँधी जी का चिन्तन संपूर्ण विश्व एवं मानवता के कल्याण का चिन्तन था।

प्रो.(डॉ.) जी. एस. शुक्ल कुलसचिव, उ. प्र. राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय इलाहाबाद ने सभी अभ्यागत अतिथियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. रामजी मिश्र जी ने किया। कुल 84 प्रतिभागियों के द्वारा प्रतिभाग किया गया।

कार्यक्रम में समापन सत्र के मुख्य अतिथि प्रो. सुरेन्द्र वर्मा प्रो. (से.नि.), देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर, मध्य प्रदेश थे। उन्होने कहा कि भूमण्डलीकरण एवं बहुराष्ट्रीय उपनिवेशवाद है और गाँधी जी का मानना था कि संस्कृति के पहचान की लड़ाई बगैर उपनिवेशवद के खिलाफ संघर्ष से अधूरी रह जायेगी। उन्होने कहा कि केवल भारतीय दिखना ही नहीं बल्कि रहने के साथ भारतीयता का भाव भी होना चाहिए। उनके अनुसार गाँधी जी वसुधैव

कुटुम्बकम के मार्ग का सदैव अनुसरण किया तथा लोगों को इसका अनुसरण करने के लिए प्रेरित भी किया। उन्होने सदैव शोषण, असमानता एवं गरीबी का सदैव विरोध किया तथा इसके स्थयाी निराकरण का मार्ग भी बताया वे स्वदेशी के प्रबल पक्षधर रहे हैं। प्रो. वर्मा के अनुसार वैज्ञानिक प्रगति तथा विकास के चलते पूरा भूमण्डल एक वैश्विक गाँव हो गया है और सभी देश आपस में एक देश से दूसरे देश में आ जा सकते हैं। इस भूमण्डलकरण के कारण ही दुनिया सिमट कर काफी छोटी हो गयी।

धन्यवाद ज्ञापन करते हुए संगोष्ठी निदेशक प्रो. सुधांशु त्रिपाठी ने कहा कि भुमण्डलीकरण और गाँधी चिन्तन दो अत्यन्त वृहद भाव समेटे हुए शब्द हैं जिनका अन्मि लक्ष्य वसुधैव कुटुम्बकम है। भूमण्डलीकरण का वर्तमान आशय जिसे आर्थिक व्यापार, सूचना संचार, तकनीकी विकास के कारण वैश्विक समीपता के रूप में समझा जाता है। यह वास्तव में पूंजीवादी शक्तियों का षडयंत्र है, जिसके द्वारा वह विश्व में अविकसित एवं गरीब देशों के उपर अपना वर्चस्व बनाये रखना चाहते हैं। संगोष्ठी का निष्कर्ष यह था कि गाँधी जी के विचारों की प्रतिबद्धता को लेकर कार्य करें जिससे एक नये समाज तथा राष्ट्र का निर्माण हो सके जिसमें समानता, विश्व बन्धुत्व, मैत्री, करूणा तथा शान्ति का भाव हो।

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय,प्रयागराज

राष्ट्रीय संगोष्ठी

(06 एवं 07 दिसम्बर, 2018)

भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् (ICSSR)
नई दिल्ली द्वारा अनुदानित

विषय–भारतीय संस्कृति में वैश्विक दृष्टि

संगोष्ठी प्रतिवेदन

आयोजक

समाज विज्ञान विद्याशाखा

राष्ट्रीय संगोष्ठी

विषय–भारतीय संस्कृति में वैश्विक दृष्टि

उ.प्र.राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय एवं भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् (ICSSR) नई दिल्ली द्वारा अनुदानित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी दिनांक–06 एवं 07 दिसम्बर 2018 को विश्वविद्यालय के सरस्वती परिसर स्थित लोकमान्य तिलक शास्त्रार्थ सभागार में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ मुख्य अतिथि प्रो. ईश्वर शरण विश्वकर्मा, अध्यक्ष ,उच्चतर शिक्षा सेवा आयोग प्रयागराज एवं माननीय कुलपति जी तथा सभी विद्याशाखाओं के निदेशकगणों द्वारा दीप प्रजवल्लन एवं मां सरस्वती की प्रतिमा पर पुष्पर्पित कर किया गया।

दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए मुख्य अतिथि एवं मा. कुलपति जी

कार्यक्रम का संचालन करते हुए श्री रमेश चन्द्र यादव एवं पुष्प गुच्छ द्वारा मुख्य अतिथि का स्वागत करती हुई

अतिथियों का स्वागत करते हुए संगोष्ठी निदेशक प्रो.सुधांशु त्रिपाठी

संगोष्ठी की पुस्तिका का विमोचन करते हुए मुख्य अतिथि, मा.कुलपति जी एवं संगोष्ठी के सदस्यगण

मुख्य अतिथि का व्याख्यान

मुख्य अतिथि ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि वर्तमान में सभ्य समाज के निर्माण हेतु एक नूतन दृष्टिकोण जिसको तीन वर्गो में–वैश्विक राष्ट्रीय एवं स्थानीय स्तर पर देखने की आवश्कता है। उन्होने 1200 ई0 से अब तक के भारतीय संस्कृति में हुए बदलाव का तार्किक एवं वैज्ञानिक ढ़ंग से विश्लेषण किया। ऋग्वेद की महत्ता भी वर्णन किया। उन्होने कहा कि भारतीय संस्कृति को विविध आयामों में देखने की आवश्यकता है। उन्होने पुराणों की महानता पर प्रकाश डाला एवं विचार, वाणी तथा क्रिया भारतीय संस्कृति के मुख्य लक्षण है। आत्मशोधन भारतीय संस्कृति की निधि है।

मा. कुलपति जी का उद्‌बोधन

मा. कुलपति जी अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि सभ्य समाज की निर्माण हेतु ज्ञान की महत्ता सर्वधिक रहा है। उन्होने कहा कि सम्पूर्ण विश्व भारत की तरफ देख रहा है। क्योकि हमारे पास समृद्ध संस्कृति एव मूल्य है जिसकी आज विश्व की आवश्यकता है। वर्तमान में औपनिवेशिक दृष्टिकोण को हटाने की आवश्यकता है एवं सीमित तरीके से संसाधनों का उपयोग करने की लिए प्रेरित किया।

प्रथम तकनीकी सत्र

डॉ0 आर. पी. एस. यादव, निदेशक, मानविकी विद्याशाखा ने प्रथम तकनीकी सत्र की अध्यक्षता की। स्रोत वक्ता प्रो0 हेरम्ब चतुर्वेदी, इतिहास विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद थे। प्रो0 हेरम्ब चतुर्वेदी ने कहा कि भारतीय संस्कृति के विविध आयाम है। उन्होने यह भी कहा कि इण्डो–ग्रीक सम्बन्धों के परिदृश्य पर प्रकाश डाला। संस्कृति एवं मूल्यों के व्यावहारिक पक्षों को समझाया।

प्रो. हेरम्ब चतुर्वेदी, इति, विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद को स्मृति चिन्ह प्रदान कर स्वागत करते हुए डॉ0 आर. पी. एस. यादव,,

व्याख्यान देते हुए जे. एन. यू. के डॉ. अनिल सिंह

जे0 एन0 यू0,नई दिल्ली के ग्रीक चेयर के असि. प्रोफेसर डॉ0 अनिल सिंह ने छात्रो, शोधकर्ताओं एवं शिक्षको का आवाहन करते हुए भारतीय–संस्कृति के अपने पुरातन रूप को प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया।

अध्यक्षीय उद्‌बोधन डॉ. आर. पी. एस. यादव, निदेशक, मानविकी विद्याशाखा

द्वितीय तकनीकी सत्र

प्रो0 सुधांशु त्रिपाठी प्रभारी, समाज विज्ञान विद्याशाखा ने द्वितीय तकनीकी सत्र की अध्यक्षता की। इस सत्र के स्रोतवक्ता प्रो0 ओम प्रकाश श्रीवास्तव, प्राचीन इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग, इलाहाबाद वि.वि इलाहाबाद रहें जिन्होने अपने वक्तव्य में भारतीय संस्कृति के आध्यात्मिक एवं मानवीय मूल्यों का विस्तृत वर्णन करते हुए बताया कि आध्यात्म द्वारा भारतीय संस्कृति को कैसे पुर्नजीवित किया जा सकता है। उन्होने भारतीय इतिहास के अनेक सामाजार्थिक पहलुओ पर भी प्रकाश डाला। पूर्व मध्यकालीन सामन्तवादी व्यवस्था पर भी सम्य्क ढ़ंग से प्रकाश डाला ।

व्याख्यान देते हुए प्रो. ओम प्रकाश श्रीवास्तव, पूर्व आचार्य, प्राचीन इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय

अध्यक्षीय उद्‌बोधन प्रो. सुधांशु त्रिपाठी,प्रोफेसर राजनीति विज्ञान एवं प्रभारी समाज विज्ञान विद्याशाखा

तृतीय तकनीकी सत्र

प्रो. दिनेश कुमार ओझा, बी. एच. यू वाराणसी को स्मृति चिन्ह देते हुए संयोजक एवं आयोजन सचिव

प्रो. दिनेश कुमार ओझा, प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग, बी. एच. यू वाराणसी ने इस सत्र की अध्यक्षता करते उन्होने भारतीय संस्कृति और इतिहास लेखन की विविध आयामो एवं उपागमो का सम्यक एवं तार्किक ढंग से उल्लेख किया। उन्होने यह बताया कि भारतीय संस्कृति किस प्रकार बदलते मूल्यों एवं आवश्यकता अनुसार अपने को सत्त स्थापित करते रहती है। उन्होने भारतीय संस्कृति की विशिष्टताओ एवं विशेषताओ के विविध आयामों का उल्लेख किया ।

डॉ. राहुल राज, बी. एच. यू. वाराणसी को स्मृति चिन्ह देते हुए संयोजक एवं आयोजन सचिव

डॉ.राहुल राज, प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग, बी. एच. यू वाराणसी ने दक्षिण–पूर्व एशिया में बौद्व धर्म के माध्यम सें भारतीय संस्कृति के व्यापक प्रचार–प्रसार का उल्लेख किया। उन्होनें यह भी बताया कि किस प्रकार से भारतीय संस्कृति ने अपने विचारों एवं नैतिक मूल्यों के कारण अपना वृहद प्रभाव कला ,धर्म ,दर्शन आदि विभिन्न क्षेत्रों डाला।

चतुर्थ तकनीकी सत्र

प्रो.आशीष सक्सेना,विभागाध्यक्ष,समाजशास्त्र विभागा इलाहाबाद विश्वविद्यालय का स्वागत करते हुए डॉ.विनोद कुमार गुप्ता ,रमेश चन्द्र यादव, डॉ.दीपशिखा श्रीवास्तव एवं डॉ.बालकेश्वर

डॉ.बालकेश्वर का स्वागत करते हुए डॉ.विनोद कुमार गुप्ता, रमेश चन्द्र यादव एवं डॉ.दीपशिखा श्रीवास्तव

समापन सत्र

मुख्य अतिथि का पुष्प गुच्छ से स्वागत करती हुई डॉ.दीपशिखा श्रीवास्तव

मा.कुलपति जी का पुष्प गुच्छ से स्वागत करती हुई डॉ.साधना श्रीवास्तव

अतिथियो का स्वागत करते हुए संगोष्ठी निदेशक प्रो.सुधांशु त्रिपाठी

कार्यक्रम में संगोष्ठी का प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए संयोजक डॉ.सन्तोषा कुमार

कार्यक्रम संयोजक डॉ. सन्तोषा कुमार ने बताया कि कुल चार तकनीकी सत्रों का आयोजन किया गया जिसमें कुल 144 (एक सौ चौवालिस) प्रतिभागियों के द्वारा पंजीकरण, प्रतिभाग एवं शोध पत्रों का वाचन किया गया।

कार्यक्रम में अपने अनुभव को साझा करते हुए प्रतिभागी

कार्यक्रम में अपने अनुभव को साझा करते हुए प्रतिभागी

मुख्य अतिथि को अंगवस्त्रम् एवं स्मृति चिन्ह से स्वागत करते हुए मा.कुलपति जी

प्रो.पृथ्वीश नाग,पूर्व कुलपति महात्मा गॉधी काशी विद्यापीठ,वाराणसी

समापन सत्र के मुख्य अतिथि महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ वाराणसी के पूर्व कुलपति एवं आई.आई.टी.,बी.एच.यू. के विजिटिंग प्रोफेसर डॉ.पी.नाग ने कहा कि भारतीय संस्कृति पूरे विश्व में व्याप्त है। जम्बिया से चाइना तक भारतीय संस्कृति की झलक दिखाई पड़ती है। उन्होने अपनी विदेश यात्राओं के संस्मरण सुनाते हुए कहा कि जाम्बिया ,ओमान,इग्लैण्ड,अमेरिका,चीन तथा वर्मा में भारतीय संस्कृति की जीती जागती तस्वीर दिखाई पड़ती है। उन्होने कहा कि आज पूरे विश्व को भारतीय संस्कृति के विशाल रूप को देखने की आवश्यकता है।

अपने अनुभव को साझा करते हुए प्रो.पृथ्वीश नाग,पूर्व कुलपति महात्मा गॉधी काशी विद्यापीठ,वाराणसी

सभागार में उपस्थित शिक्षकगण

मा.कुलपति जी का उद्‌बोधन

माननीय कुलपति प्रो.कामेश्वर नाथ सिंह ने समापन सत्र की अध्यक्षता करते हुए कहा कि भारतीय संस्कृति की विशालता स्वयं सिद्व है। हमारा अतीत गौरवशाली रहा है। आज विश्व का परिदृश्य बदल रहा है। भारतीय संस्कृति का विस्तार तभी हो सकता है जब हम सांस्कृतिक कुरीतियों.दहेज प्रथा,छूआछूत,स्वार्थ तथा भेद भावना पर प्रहार कर इनकी जड़ों को कमजोर करें।

धन्यवाद ज्ञापन करते हुए डॉ.आर.पी.एस.यादव,निदेशक मानविकी विद्याशाखा

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

एक दिवसीय राष्ट्रीय वेबिनार

(04 अगस्त, 2021)

विषय—भारतीय सांस्कृतिक विरासत

वेबिनार प्रतिवेदन

संयोजक

प्रो.सन्तोषा कुमार

प्रभारी,समाज विज्ञान विद्याशाखा

आयोजन सचिव

सुनील कुमार

असिस्टेंट प्रोफेसर

आयोजक

समाज विज्ञान विद्याशाखा

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय,

प्रयागराज

मुख्य वक्ता का उद्‌बोधन

उ..प्र.राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय प्रयागराज के समाज विज्ञान विद्याशाखा के तत्वाधान में 04 अगस्त 2021 को **भारतीय सांस्कृतिक विरासत** विषय पर एक दिवसीय वेबिनार आयोजित किया गया। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता प्रो.ओंकारनाथ सिंह, विभागाध्यक्ष, प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरात्त्व विभाग काशी हिन्दू विश्वविद्यालय,वारणसी रहे। उन्होने कहा कि अनेकता में एकता भारतीय संस्कुति का मूल मंत्र है। बसुधैव कुटुम्बकम भारतीय संस्कृति का मूल आधार है। संस्कृति किसी सामाज की मांसिक निधि का परिचायक होती है जिससे उस समाज के सर्वांगीण मूल्यांकन किया जाता है। उन्होने भारतीय सांस्कृतिक विरासत के अर्न्तगत मूर्त एवं अमूर्त तत्वो का अन्तर बताया। उन्होने बौद्ध परिपथ–सारनाथ, लुम्बनी, कुशीनगर का उल्लेख किया। प्रो. सिह ने प्राचीन भारत के महत्वपूर्ण शैक्षणिक संस्थानो जैसे तक्षशिला, नालन्दा, विक्रमशिलाा आदि संस्थानो के गौरव तथा महत्वपूर्ण योगदानो का उल्लेख किया। उन्हाने प्रसिद्ध इतिहासकार प्रो. राज बली पाण्डेय जी द्वारा संस्कृति के विभिन्न पक्षो जैसे बर्बरता, सभ्यता का उल्लेख किया। उन्होने भारत की धार्मिक परमपरा विविघता एवं धार्मिक सहिष्णुता का उल्लेख किया उन्होने काशी के राजघाट पुरास्थल के उत्खनन से प्राप्त पुरावशेषो के आधार पर काशी की प्राचीनता को

बताया। उन्होने यूनेस्को द्वारा धौलावीरा नामक पुरास्थल को विश्व विरासत की सूची में समिलित किये जाने की जानकारी दी। उन्होने सिक्को के आधार पर भारतीय संस्कृति के महत्व को रेखाकिंत करते हुए औदुम्बर नामक जनजाति द्वारा चलाये गये सिक्कों पर अंकित अंकनो के आधार पर उनकी संस्कृति का मूल्यांकन किया जा सकता है। प्रो0 सिंह ने संग्रहालय को और अत्यधिक समृद्ध किये जाने की आवश्यकता बताया जिससे भारतीय सांस्कृतिक विरासत का सम्यक मूल्यांकन किया जा सके। उन्होने भारत की सांस्कृतिक विविधता के महत्व का उल्लेख किया । आपने सिन्धु घाटी की सभ्यता के सांस्कृतिक महत्व का उल्लेख किया। भारतीय संस्कृति की मूल विशेषता—बसुधैव कुटुम्बकम की भावना पर आधारित है। आपने भारत की धार्मिक परम्परा का उल्लेख किया।

अतिथियों का परिचय एवं औपचारिक स्वागत करते हुए
प्रो. संतोषा कुमार
प्रभारी निदेशक
समाज विज्ञान विद्याशाखा

कार्यक्रम का संचालन करते हुए
सुनील कुमार
असिस्टेन्ट प्रोफेसर

सांस्कृतिक धरोहर प्रत्येक देश का आईना– आयुक्त

मुख्य अतिथि श्री संजय गोयल आयुक्त प्रयागराज मंडल ने कहा कि सांस्कृतिक धरोहर प्रत्येक देश का आईना होता है। उन्होंने भारत देश को महापुरुषों की कर्म स्थली बताते हुए कहा कि अनेकता में एकता ही भारतीय संस्कृति की पहचान है। उन्होंने कहा कि भारतीय संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता दूसरी संस्कृतियों को बिना क्षति पहुंचाए अपने अस्तित्व को बनाए रखना है। हमारे यहां अतिथि देवो भव की परंपरा भारतीय संस्कृति के मूल में रही है। मंडलायुक्त श्री गोयल ने भारतीय संविधान में वर्णित अधिकारों तथा कर्तव्यों का उल्लेख करते हुए बताया कि हम सभी नागरिकों का यह परम कर्तव्य है कि हमें अपनी सांस्कृतिक विरासत का सम्मान तथा संरक्षण करना चाहिए। उन्होंने पूर्वोत्तर राज्यों में विभिन्न जनजातियों गारो, खासी तथा जयंतिया की जीवन शैली का उल्लेख किया तथा भाषाओं की विविधता के साथ–साथ धार्मिक विविधता जैनधर्म, बौद्ध धर्म का सिख धर्म का भी उल्लेख किया। श्री गोयल ने भारत की विभिन्न परंपराओं, त्योहारों तथा गंगा जमुनी संस्कृति का उल्लेख करते हुए प्रयागराज के कुंभ मेले के सांस्कृतिक महत्व को प्रतिपादित किया।

मुख्य अतिथि का व्याख्यान

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री संजय गोयल, आयुक्त प्रयागराज मण्डल, प्रयागराज ने भारतीय संस्कृति के विभिन्न आयामों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि सांस्कृतिक धरोहर प्रत्येक देश का आइना होता है। आपने भारतवर्ष को महापुरूषों की कर्मस्थली बताते हुए कहा कि अनेकता में एकता भारतीय संस्कृति की पहचान है। आपने पूर्वोत्तर भारत के विभिन्न राज्यों यथा–मेघालय,आसाम की विभिन्न जनजातियों जैसे–गारों,खासी तथा जयन्तिया आदि के जीवन शैली तथा उनकी सांस्कृतिक विशिष्टताओं का उल्लेख किया। आपने भाषाओं की विविधता के साथ–साथ धार्मिक विविधता का भी उल्लेख किया। अपने उद्बोधन में आपने भारत की विभिन्न परम्पराओं,त्यौहारों तथा गंगा–जमुनी संस्कृति का उल्लेख किया। अपने उद्बोधन में

कहा कि वर्तमान में सभ्य समाज के निर्माण हेतु एक नूतन दृष्टिकोण जिसको तीन वर्गो में–वैश्विक राष्ट्रीय एवं स्थानीय स्तर पर देखने की आवश्कता है। उन्होने 1200 ई0 से अब तक के भारतीय संस्कृति में हुए बदलाव का तार्किक एवं वैज्ञानिक ढ़ंग से विश्लेषण किया। ऋग्वेद की महत्ता भी वर्णन किया। उन्होने कहा कि भारतीय संस्कृति को विविध आयामों में देखने की आवश्यकता है। उन्होने पुराणों की महानता पर प्रकाश डाला एवं विचार, वाणी तथा क्रिया भारतीय संस्कृति के मुख्य लक्षण है। आत्मशोधन भारतीय संस्कृति की निधि है। मण्लायुक्त ने प्रयागराज की कुम्भ मेले की सास्कृति महत्व का उल्लेख किया।

सर्व समावेशी है भारतीय संस्कृति– प्रोफेसर सीमा सिंह

अध्यक्षता करते हुए उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय की कुलपति प्रोफेसर सीमा सिंह ने कहा कि भारतीय संस्कृति एक मूल्य दृष्टि है। संस्कृति देश की आत्मा तथा प्रेरणा स्रोत है। जिसके आधार पर राष्ट्र अपने लक्ष्य तथा आदर्शों का निर्माण करता है। संस्कृति संस्कारों की अभिव्यक्ति है। कुलपति प्रो0 सिंह ने प्राचीन भारत के महान विद्वानों तथा वैज्ञानिकों आर्यभट्ट, वराहमिहिर तथा पतंजलि जैसे प्रसिद्ध व्यक्तित्वों का उल्लेख करते हुए उन्हें भारत की धरोहर बताया। उन्होंने कहा कि भारतीय संस्कृति सर्व समावेशी संस्कृति, मूल्यों, परम्पराओं तथा चिंतन का सुंदर समन्वय है।

मा0 कुलपति महोदया का उद्‌बोधन

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रही विश्वविद्यालय की मा0 कुलपति प्रो0 सीमा सिंह महोदया ने भारतीय संस्कृतिक विरासत के महत्व का उल्लेख करते हुए कहा कि भारतीय संस्कृति एक मूल्य दृष्टि है जो उससे निर्दिष्ट होने वाले प्रभावों एवं संस्कारो का नाम है। संस्कृति देश की

आत्मा तथा प्रेरणा स्रोत है जिसके आधार पर राष्ट्र अपने लक्ष्यों तथा आदर्शो का निर्माण करता है। संस्कृति संस्कारो की अभिव्यक्ति है जो मनुष्य के सामाजिक आचरण तथा व्यवहार में परिलक्षित होता है। यह मानवीय सद्गुणो की सुन्दर, समरस अभिव्यक्ति एवं व्याख्या है। उन्होने प्राचीन भारत के महान विद्वानो जैसे आर्यभटट् वराहमिहिर तथा पतंजलि जैसे प्रसिद्ध व्यक्तित्वों का उल्लेख किया। आपने उपने उद्बोधन में भारतीय संस्कृति को सर्व समावेशी संस्कृति, मूल्यों, परमपराओं का सुन्दर समन्वय बताया ।

उक्त कार्यक्रम में आनलाइन रूप से विभिन्न विद्याशाखाओं के निदेशकगण, आचार्य,सह आचार्य,सहायक आचार्य शैक्षणिक परामर्शदाता ने प्रतिभाग किया। इसके अलावा उत्तराखण्ड, छत्तीसगढ़,विहार आदि विभिन्न प्रान्तों के प्रतिभागियों ने भी प्रतिभाग किया। समाज विज्ञान विज्ञान विद्याशाखा के डॉ. आनन्दा नन्द त्रिपाठी, सह आचार्य, डॉ.संजय कुमार सिंह, सह आचार्य, श्री सुनील कुमार सहायक आचार्य, डॉ.त्रिविक्रम तिवारी, सहायक निदेशक, समाज विज्ञान विद्याशाखा, डॉ.रमेश चन्द्र यादव,शैक्षणिक परामर्शदाता,डॉ.दीपशिखा श्रीवास्वत, ,शैक्षणिक परामर्शदाता डॉ. अभिषेक सिंह, ,शैक्षणिक परामर्शदाता श्री मनोज कुमार,शैक्षणिक परामर्शदाता आदि उपस्थित रहे।

धन्यवाद ज्ञापन करते हुए
डॉ0 संजय कुमार सिंह

समय से पहले 'समय' पर नजर

न्यायाधीश

प्रयागराज, गुरूवार 05 अगस्त, 2021

सांस्कृतिक धरोहर प्रत्येक देश का आईना- मंडलायुक्त

सर्व समावेशी है भारतीय संस्कृति- प्रोफेसर सीमा सिंह,मुक्त विश्वविद्यालय में भारतीय सांस्कृतिक विरासत पर वेबीनार

Voice Of Allahabad NEWS

हिन्दी दैनिक

R.N.I No. UPHIN/2014/59094

वॉइस ऑफ इलाहाबाद

प्रयागराज वर्ष : 07 अंक: 256 पृष्ठ : 8 मूल्य : 1 रुपया गुरुवार 05 अगस्त 2021

Voice Of Allahabad - Hindi Dainik E-mail:-voiceofallahabadnews@gmail.com www.voiceofallahabad.com

खबर वही जो सच हो..

सांस्कृतिक धरोहर प्रत्येक देश का आईनाः मण्डलायुक्त

सर्व समावेशी है भारतीय संस्कृतिः प्रो सीमा सिंह,मुक्त विवि में भारतीय सांस्कृतिक विरासत पर वेबीनार

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय के समाज विज्ञान विद्या शाखा के तत्वावधान में बुधवार को "भारतीय सांस्कृतिक विरासत" पर राष्ट्रीय वेबीनार का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि आयुक्त, प्रयागराज मंडल संजय गोयल ने कहा कि सांस्कृतिक धरोहर प्रत्येक देश का आईना होता है। उन्होंने भारत देश को महापुरुषों की कर्मस्थली बताते हुए कहा कि अनेकता में एकता ही भारतीय संस्कृति की पहचान है। भारतीय संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता दूसरी संस्कृतियों को बिना क्षति पहुंचाए अपने अस्तित्व को बनाए रखना है। हमारे यहां अतिथि देवो भव की परम्परा भारतीय संस्कृति के मूल में रही है।

मंडलायुक्त श्री गोयल ने भारतीय संविधान में वर्णित अधिकारों तथा कर्तव्यों का उल्लेख करते हुए बताया कि हम सभी नागरिकों का यह परम कर्तव्य है कि हमें अपनी सांस्कृतिक विरासत का सम्मान तथा संरक्षण करना चाहिए। उन्होंने पूर्वोत्तर राज्यों में विभिन्न जनजातियों गारो, खासी तथा जयंतिया की जीवन शैली का उल्लेख किया तथा भाषाओं की विविधता के साथ-साथ धार्मिक विविधता जैन धर्म, बौद्ध धर्म का सिख धर्म का भी उल्लेख किया। श्री गोयल ने भारत की विभिन्न परम्पराओं, त्यौहारों तथा गंगा जमुनी संस्कृति का उल्लेख करते हुए प्रयागराज के कुम्भ मेले के सांस्कृतिक महत्व को प्रतिपादित किया। अध्यक्षता करते हुए उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विवि की कुलपति प्रो. सीमा सिंह ने कहा कि भारतीय संस्कृति एक मूल्य दृष्टि है। संस्कृति देश की आत्मा तथा प्रेरणास्रोत है। जिसके आधार पर राष्ट्र अपने लक्षण तथा आदर्शों का निर्माण करता है। संस्कृति संस्कारों की अभिव्यक्ति है। कुलपति ने प्राचीन भारत के महान विद्वानों तथा वैज्ञानिकों आर्यभट्ट, वाराह मिहिर तथा पतंजलि जैसे प्रसिद्ध व्यक्तियों का उल्लेख करते हुए उन्हें भारत की धरोहर बताया। कहा कि भारतीय संस्कृति सर्वसमावेशी संस्कृति, मूल्यों, परम्पराओं तथा चिंतन का सुंदर समन्वय है।

वेबीनार के मुख्य वक्ता प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग, काशी हिंदू विश्वविद्यालय विभागाध्यक्ष प्रो ओंकार नाथ सिंह ने भारतीय संस्कृति का उल्लेख करते हुए भारतीय एकता को मूल तत्व बताया। उन्होंने सिंधु सभ्यता के सांस्कृतिक महत्व पर प्रकाश डाला तथा काशी क्षेत्र स्थित सारनाथ के ऐतिहासिक महत्व का उल्लेख किया। उन्होंने बौद्ध परिपथ, सारनाथ, लुम्बिनी, बोधगया तथा कुशीनगर के ऐतिहासिक महत्व का उल्लेख किया। उन्होंने गुजरात में धौलावीरा नामक पुरातात्विक स्थल को यूनेस्को द्वारा विश्व विरासत की सूची में शामिल किए जाने की नवीनतम जानकारी प्रदान की।

कार्यक्रम का संचालन तथा संयोजन डॉ सुनील कुमार एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ संजय कुमार सिंह ने किया। राष्ट्रीय वेबीनार में डॉ आनंदानंद त्रिपाठी, डॉ त्रिविक्रम तिवारी, रमेश चंद्र यादव, डॉ दीपशिखा श्रीवास्तव, डॉ अभिषेक सिंह, मनोज कुमार तथा उत्तराखंड, छत्तीसगढ़, बिहार, उत्तर प्रदेश आदि राज्यों से प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया।

हिन्दी दैनिक

इलाहाबाद एक्सप्रेस

इलाहाबाद एक्सप्रेस | प्रयागराज

सांस्कृतिक धरोहर प्रत्येक देश का आईना : मण्डलायुक्त

सर्व समावेशी है भारतीय संस्कृति : प्रो सीमा सिंह, मुक्त विवि में भारतीय सांस्कृतिक विरासत पर वेबीनार

मण्डलायुक्त ने अधिकारियों को बाढ़ के दृष्टिगत सतर्क रहने के दिये निर्देश

---

www.sahajsatta.in

facebook.com/sahajsatta.allahabad

सहजसत्ता

सत्य की सत्ता को समर्पित

वर्ष 14 अंक 50 पृष्ठ-8 प्रयागराज गुरुवार, 5 अगस्त, 2021 मूल्य 1.00 रुपये मात्र

सांस्कृतिक धरोहर प्रत्येक देश का आईनाः मण्डलायुक्त

प्रयागराज(नि.सं.)। उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय के समाज विज्ञान विद्या शाखा के तत्वावधान में बुधवार को "भारतीय सांस्कृतिक विरासत" पर राष्ट्रीय वेबीनार का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि आयुक्त, प्रयागराज मंडल संजय गोयल ने कहा कि सांस्कृतिक धरोहर प्रत्येक देश का आईना होता है। उन्होंने भारत देश को महापुरुषों की कर्मस्थली बताते हुए कहा कि अनेकता में एकता ही भारतीय संस्कृति की पहचान है। भारतीय संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता दूसरी संस्कृतियों को बिना क्षति पहुंचाए अपने अस्तित्व को बनाए रखना है। हमारे यहां अतिथि देवो भव की परम्परा भारतीय संस्कृति के मूल में रही है।

मंडलायुक्त श्री गोयल ने भारतीय संविधान में वर्णित अधिकारों तथा कर्तव्यों का उल्लेख करते हुए बताया कि हम सभी नागरिकों का यह परम कर्तव्य है कि हमें अपनी सांस्कृतिक विरासत का सम्मान तथा संरक्षण करना चाहिए। उन्होंने पूर्वोत्तर राज्यों में विभिन्न जनजातियों गारो, खासी तथा जयंतिया की जीवन शैली का उल्लेख किया तथा भाषाओं की विविधता के साथ-साथ धार्मिक विविधता जैन धर्म, बौद्ध धर्म का सिख धर्म का भी उल्लेख किया। श्री गोयल ने भारत की विभिन्न परम्पराओं, त्योहारों तथा गंगा जमुनी संस्कृति का उल्लेख करते हुए प्रयागराज के कुम्भ मेले के सांस्कृतिक महत्व को प्रतिपादित किया।अध्यक्षता करते हुए उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विवि की कुलपति प्रो. सीमा सिंह ने कहा कि भारतीय संस्कृति एक मूल्य दृष्टि है। संस्कृति देश की आत्मा तथा प्रेरणास्रोत है। जिसके आधार पर राष्ट्र अपने लक्षण तथा आदर्शों का निर्माण करता है। संस्कृति संस्कारों की अभिव्यक्ति है। कुलपति ने प्राचीन भारत के महान विद्वानों तथा वैज्ञानिकों आर्यभट्ट, वाराह मिहिर तथा पतंजलि जैसे प्रसिद्ध व्यक्तियों का उल्लेख करते हुए उन्हें भारत की धरोहर बताया। कहा कि भारतीय संस्कृति सर्वसमावेशी संस्कृति, मूल्यों, परम्पराओं तथा चिंतन का सुंदर समन्वय है।

वेबीनार के मुख्य वक्ता प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग, काशी हिंदू विश्वविद्यालय विभागाध्यक्ष प्रो ओंकार नाथ सिंह ने भारतीय संस्कृति का उल्लेख करते हुए भारतीय एकता को मूल तत्व बताया। उन्होंने सिंधु सभ्यता के सांस्कृतिक महत्व पर प्रकाश डाला तथा काशी क्षेत्र स्थित सारनाथ के ऐतिहासिक महत्व का उल्लेख किया। उन्होंने बौद्ध परिपथ, सारनाथ, लुम्बिनी, बोधगया तथा कुशीनगर के ऐतिहासिक महत्व का उल्लेख किया। उन्होंने गुजरात में धौलावीरा नामक पुरातात्विक स्थल को यूनेस्को द्वारा विश्व विरासत की सूची में शामिल किए जाने की नवीनतम जानकारी प्रदान की।कार्यक्रम का संचालन तथा संयोजन डॉ सुनील कुमार एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ संजय कुमार सिंह ने किया। राष्ट्रीय वेबीनार में डॉ आनंदानंद त्रिपाठी, डॉ त्रिविक्रम तिवारी, रमेश चंद्र यादव, डॉ दीपशिखा श्रीवास्तव, डॉ अभिषेक सिंह, मनोज कुमार तथा उत्तराखंड, छत्तीसगढ़, बिहार, उत्तर प्रदेश आदि राज्यों से प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया।

दैनिक सच्चाई की जंग

लोकमित्र

वर्ष : 27 | अंक : 275 प्रयागराज | गुरुवार, 5 अगस्त-2021 पृष्ठ : 8 | मूल्य : 3 रुपये

सांस्कृतिक धरोहर प्रत्येक देश का आईना- मंडलायुक्त

सर्व समावेशी है भारतीय संस्कृति- प्रोफेसर सीमा सिंह मुक्त विश्वविद्यालय में भारतीय सांस्कृतिक विरासत पर वेबीनार

पायनियर

लखनऊ, बृहस्पतिवार, 5 अगस्त, 2021

प्रत्येक देश का आईना है सांस्कृतिक धरोहरः कमिश्नर

- सर्व समावेशी है भारतीय संस्कृतिः प्रो. सीमा
- मुक्त विवि में भारतीय सांस्कृतिक विरासत पर वेबिनार आयोजित

वेबिनार में शामिल कमिश्नर और कुलपति।

प्रयागराज। उप्र राजर्षि टंडन मुक्त विवि के समाज विज्ञान विद्या शाखा के तत्वावधान में बुधवार को भारतीय सांस्कृतिक विरासत विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय वेबिनार आयोजित हुआ। मुख्य अतिथि कमिश्नर संजय कुमार गोयल ने कहा कि सांस्कृतिक धरोहर प्रत्येक देश का आईना होता है। भारत देश को महापुरुषों की कर्मस्थली बताते हुए कहा कि अनेकता में एकता ही भारतीय संस्कृति की पहचान है। भारतीय संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता दूसरी संस्कृतियों को बिना क्षति पहुंचाए अपने अस्तित्व को बनाए रखना है। गोयल ने भारतीय संविधान में वर्णित अधिकारों तथा कर्तव्यों का उल्लेख करते हुए कहा कि सभी नागरिकों का यह परम कर्तव्य है कि हमें अपनी सांस्कृतिक विरासत का सम्मान तथा संरक्षण करना चाहिए। भाषाओं की विविधता के साथ साथ धार्मिक विविधता जैन धर्म बौद्ध धर्म सिख धर्म का भी उल्लेख किया। गोयल ने भारत की विभिन्न परंपराओं त्योहारों तथा गंगा जमुनी संस्कृति का उल्लेख करते हुए प्रयागराज के कुंभ मेले के सांस्कृतिक महत्व को बताया।

अध्यक्षता कर रहीं कुलपति प्रो सीमा सिंह ने कहा कि भारतीय संस्कृति एक मूल्य दृष्टि है। संस्कृति देश की आत्मा तथा प्रेरणा स्रोत है। जिसके आधार पर राष्ट्र अपने लक्षण तथा आदर्शों का निर्माण करता है। संस्कृति संस्कारों की अभिव्यक्ति है। कुलपति प्रो सिंह ने प्राचीन भारत के महान विद्वानों तथा वैज्ञानिकों आर्यभट्ट वाराहमिहिर तथा पतंजलि जैसे प्रसिद्ध व्यक्तित्वों का उल्लेख करते हुए उन्हें भारत की धरोहर बताया।

भारतीय संस्कृति सर्व समावेशी संस्कृति मूल्यों परंपराओं तथा चिंतन का सुंदर समन्वय है। मुख्य वक्ता प्रो ओंकार नाथ सिंह विभागाध्यक्ष प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग काशी हिंदू विश्वविद्यालय वाराणसी ने भारतीय संस्कृति का उल्लेख किया। उन्होंने बौद्ध परिपथ सारनाथ लुंबिनी बोधगया तथा कुशीनगर के ऐतिहासिक महत्व का भी उल्लेख किया। अतिथियों का स्वागत वेबिनार के संयोजक प्रो एस कुमार ने किया। संचालन तथा संयोजन डा सुनील कुमार एवं धन्यवाद ज्ञापन डा संजय कुमार सिंह ने किया। राष्ट्रीय वेबिनार में डा आनंदानंद त्रिपाठी डा त्रिविक्रम तिवारी रमेश चंद्र यादव डा दीपशिखा श्रीवास्तव डा अभिषेक सिंह मनोज कुमार आदि रहे।

दैनिक कर्मठ
राष्ट्रीय एकता के प्रति समर्पित
प्रयागराज, गुरुवार, 05 अगस्त 2021 विक्रम संवत 2078 प्रात: संस्करण ईमेल -dainikkarmath@gmail.com पृष्ठ : 08

सांस्कृतिक धरोहर प्रत्येक देश का आईना- मंडलायुक्त
सर्व समावेशी है भारतीय संस्कृति- प्रोफेसर सीमा सिंह
मुक्तविश्वविद्यालय में भारतीय सांस्कृतिक विरासत पर वेबीनार

Prayagraj, Thursday 5 August 2021 WEBSITE : www.jeevanexpress.in

JEEVAN EXPRESS

Cultural heritage mirror of every country: Divisional Commissioner

Webinar on Indian Cultural Heritage held at Open University

STAFF REPORTER

PRAYAGRAJ: A one-day national webinar on the topic of Indian Cultural Heritage was organized under the aegis of Social Science Vidya Branch of Uttar Pradesh Rajarshi Tandon Open University on Wednesday. On this occasion, Chief Guest Commissioner Prayagraj Division Sanjay Goyal said that cultural heritage is the mirror of every country. Describing the country of India as the work place of great men, he said that unity in diversity is the identity of Indian culture. He said that the biggest feature of Indian culture is to maintain its existence without harming other cultures.

Presiding over Vice Chancellor, Uttar Pradesh Rajarshi Tandon Open University, Prof. Seema Singh said that Indian culture is a value vision. Culture is the soul and source of inspiration of the country. On the basis of which the nation builds its characteristics and ideals.

On this occasion, the keynote speaker of the webinar, HoD Ancient Indian History, Culture and Archaeology, Banaras Hindu University, Varanasi Prof. Omkar Nath Singh mentioned Indian culture as the basic element of Indian unity. At the beginning of the program, the convener of the webinar, Professor S Kumar welcomed the guests. The program was conducted and coordinated by Dr. Sunil Kumar and vote of thanks by Dr. Sanjay Kumar Singh.

Dr. Anand Tripathi, Dr. Trivikram Tiwari, Ramesh Chandra Yadav, Dr. Deepshikha Srivastava, Dr. Abhishek Singh, Manoj along with participants from several States including Uttarakhand, Chhattisgarh, Bihar and Uttar Pradesh.

www.rajexpress.co

सच कहने का साहस और सलीका

राज एक्सप्रेस

ग्वालियर

सांस्कृतिक धरोहर प्रत्येक देश का आईना : मंडलायुक्त

प्रयागराज, (ब्यूरो)। उप्र राजर्षि टंडन मुक्त विवि के समाज विज्ञान विद्या शाखा के तत्वावधान में बुधवार को भारतीय सांस्कृतिक विरासत विषय पर राष्ट्रीय वेबीनार का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि संजय गोयल आयुक्त प्रयागराज मंडल ने कहा कि सांस्कृतिक धरोहर प्रत्येक देश का आईना होता है। उन्होंने भारत देश को महापुरुषों की कर्म स्थली बताते हुए कहा कि अनेकता में एकता ही भारतीय संस्कृति की पहचान है। उन्होंने कहा कि भारतीय संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता दूसरी संस्कृतियों को बिना क्षति पहुंचाए अपने अस्तित्व को बनाए रखना है। हमारे यहां अतिथि देवो भव की परंपरा भारतीय संस्कृति के मूल में रही है। हम सभी नागरिकों का यह परम कर्तव्य है कि हमें अपनी सांस्कृतिक विरासत का सम्मान तथा संरक्षण करना चाहिए। उन्होंने पूर्वोत्तर राज्यों में विभिन्न जनजातियों गारो, खासी तथा जयंतिया की जीवन शैली का उल्लेख किया तथा भाषाओं की विविधता के साथ-साथ धार्मिक विविधता जैनधर्म, बौद्ध धर्म का सिख धर्म का भी उल्लेख किया। राष्ट्रीय वेबीनार में डॉ. आनंदानंद त्रिपाठी, डॉ त्रिविक्रम तिवारी, रमेश चंद्र यादव, डॉ दीपशिखा श्रीवास्तव, डॉ. अभिषेक सिंह, मनोज कुमार तथा उत्तराखंड, छग, बिहार, उप्र आदि राज्यों से प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया।

प्रयागराज, गुरुवार, 5 अगस्त 2021

जनसंदेश टाइम्स
परख सच की

प्रयागराज, वाराणसी, लखनऊ, कानपुर एवं गोरखपुर से प्रकाशित

अनेकता में एकता ही भारतीय संस्कृति की पहचान : मंडलायुक्त

वेबिनार

संस्कृति देश की आत्मा तथा प्रेरणा स्रोत है : प्रो सीमा सिंह

जनसंदेश न्यूज

राष्ट्रीय वेबिनार में बोलते मण्डलायुक्त व अन्य

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय के समाज विज्ञान विद्या शाखा की ओर से बुधवार को भारतीय सांस्कृतिक विरासत विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय वेबीनार हुआ। इस अवसर पर मुख्य अतिथि मंडलायुक्त आशीष गोयल ने कहा कि अनेकता में एकता ही भारतीय संस्कृति की पहचान है। संस्कृतियां हर देश की धरोहर तथा आईना होता है। उन्होंने भारतीय संस्कृति की विशेषता बताते हुए कहा कि दूसरी संस्कृतियों को बिना क्षति पहुंचाए अपने अस्तित्व को बनाए रखना है। हमारे यहां अतिथि देवो भव की परंपरा भारतीय संस्कृति के मूल में रही है। मंडलायुक्त श्री गोयल ने भारतीय संविधान में वर्णित अधिकारों तथा कर्तव्यों का उल्लेख करते हुए बताया कि हम सभी नागरिकों का यह परम कर्तव्य है कि हमें अपनी सांस्कृतिक विरासत का सम्मान तथा संरक्षण करना चाहिए। वेबीनार की अध्यक्षता करते हुए मुक्त विश्वविद्यालय की कुलपति प्रों

सीमा सिंह ने कहा कि भारतीय संस्कृति एक मूल्य दृष्टि है। संस्कृति देश की आत्मा तथा प्रेरणा स्रोत है। जिसके आधार पर राष्ट्र अपने लक्षण तथा आदर्शों का निर्माण करता है। इस अवसर पर वेबीनार के मुख्य वक्ता प्रोफेसर ओंकार नाथ सिंह, विभागाध्यक्ष, प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग, काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी ने भारतीय संस्कृति का उल्लेख करते हुए भारतीय एकता को मूल तत्व बताया। उन्होंने सिंधु सभ्यता के सांस्कृतिक महत्व पर प्रकाश डाला तथा काशी क्षेत्र में स्थित सारनाथ के ऐतिहासिक महत्व का उल्लेख किया। उन्होंने बौद्ध परिपथ, सारनाथ, लुंबिनी, बोधगया तथा कुशीनगर के ऐतिहासिक महत्व का उल्लेख किया। साथ ही गुजरात में धौलावीरा नामक पुरातात्विक स्थल को यूनेस्को द्वारा विश्व विरासत की सूची में शामिल किए जाने की नवीनतम जानकारी प्रदान की। इस अवसर पर वेबीनार संयोजक प्रोफेसर एस कुमार ने अतिथियों का स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन तथा संयोजन डॉ सुनील कुमार एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ संजय कुमार सिंह ने किया। राष्ट्रीय वेबीनार में डॉ आनंदानंद त्रिपाठी, डॉ त्रिविक्रम तिवारी, रमेश चंद्र यादव, डॉ दीपशिखा श्रीवास्तव, डॉ अभिषेक सिंह, मनोज कुमार तथा उत्तराखंड, छत्तीसगढ़, बिहार, उत्तर प्रदेश आदि राज्यों से प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया।

उत्तर प्रदेष राजर्षि टण्डन मुक्त विष्वविद्यालय, इलाहाबाद

राष्ट्रीय संगोष्ठी

‘ग्रीन सोशल वर्क’

(Green Social Work)

11, मार्च, 2015

प्रतिवेदन

आयोजक

समाज विज्ञान विद्याशाखा

उत्तर प्रदेष राजर्षि टण्डन मुक्त विष्वविद्यालय, इलाहाबाद
सेक्टर–एफ, शान्तिपुरम् (फाफामऊ), इलाहाबाद–211013
Web. www.uprtou.ac.in

राष्ट्रीय संगोष्ठी

‘ग्रीन सोषल वर्क’

(Green Social Work)

11मार्च, 2015

संरक्षक

प्रो0 एम.पी. दुबे

संयोजक

डॉ0 एम.एन. सिंह

आयोजन सचिव

डॉ0 अल्का वर्मा

आयोजन समिति

डॉ0 इति तिवारी
डॉ0 एस. कुमार
डॉ0 श्रुति
डॉ0 गिरीष कुमार
डॉ0 रंजना श्रीवास्तव

डॉ0 स्मिता अग्रवाल
डॉ0 दीपषिखा श्रीवास्तव
डॉ0 सतीष कलौंजिया
श्री रमेष चन्द्र यादव

संगोष्ठी का प्रारम्भ मुख्य अतिथि माननीय प्रो0 षिवाकान्त ओझा, प्राविधिक षिक्षा मंत्री उत्तर प्रदेष सरकार, अध्यक्ष प्रो. एम0पी0 दुबे, माननीय कुलपति, उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विष्वविद्यालय, इलाहाबाद, मुख्य वक्ता प्रो0 आर0एन0 सिंह द्वारा दीप प्रज्जवल कर एवं माँ सरस्वती एवं राजर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन जी की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर किया गया। कार्यक्रम के प्रारम्भ में सरस्तवी वन्दना एवं विष्वविद्यालय कुलगीत प्रस्तुत किया गया एवं सभी अतिथियों का स्वागत पुष्प गुच्छ प्रदान कर किया गया।

वेबसाइट का उद्घाटन–

सर्वप्रथम माननीय प्रो. षिवाकान्त ओझाजी द्वारा नयी तकनीकि पर आधारित विष्वविद्यालय की नयी साइट 'सिंगल विन्डो आपरेषन' का उद्घाटन किया गया। इस विन्डो साइट के द्वारा विष्वविद्यालय के समस्त क्रियाकलापों को पहले ही पैनल पर देखा जा सकता है। शारीरिक रुप से असक्षम (विकलांग) छात्र छात्राओं के लिए एक विषेष सुविधा वेबसाइट पर दी गयी है, जिसके अन्तर्गत जिन छात्रों को फोल्डर को बड़ा करके देख सकते है, एवं आडियों के जरिये वेबसाइट की सारी सूचनाओं एवं जानकारियों को सुन भी सकते है। कलर ब्लाइंडनेष छात्रों के लिये मल्टीकलर आबॅसन की सुविधा की उपलब्ध करायी गयी है।

उद्घाटन सत्र–

विष्वविद्यालय की इस नवीन वेबसाइट के उद्घाटन के उपरान्त संगोष्ठी का उद्घाटन सत्र प्रारम्भ किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि माननीय प्रो0 षिवाकान्त ओझा जी, प्राविधिक षिक्षा मंत्री, उत्तर प्रदेष सरकार, उत्तर प्रदेष, संगोष्ठी के अध्यक्ष प्रो0 एम0पी0 दुबे, माननीय कुलपति, उत्तर प्रदेष राजर्षि टण्डन मुक्त विष्वविद्यालय, इलाहाबाद एवं मुख्य वक्ता प्रो0 आर0एन0 सिंह हेतवती नन्दन बहुगुणा विष्वविद्यालय, गढ़वाल रहे।

संगोष्ठी के प्रारम्भ में संगोष्ठी के संयोजक डॉ0 एम0एन0 सिंह जी द्वारा सभी अतिथियों का परिचय एवं अतिथियों एवं प्रतिभागियों का स्वागत किया गया। संगोष्ठी का आयोजन सचिव, डॉ0 अल्का वर्मा संगोष्ठी की आयोजन सचिव द्वारा संगोष्ठी विषय प्रवर्तन को स्पष्ट किया गया।

प्रो0 आर0 एन0 सिंह संगोष्ठी के मुख्य वक्ता प्रो0 आर0एन0 सिंह, हेमवती नन्दन बहुगुणा विष्वविद्यालय, गढ़वाल ने प्रतिभागियों को स्पष्ट किया कि ग्रीन शब्द पूरे पर्यावरण के लिये प्रयुक्त होता है। उन्होंने पर्यावरण केन्द्रित समाज कार्य, पर्यावरण एवं मानव किस प्रकार एक दूसरे के पूरक है पर विषेष प्रकाष डाला।

माननीय प्रो0 माननीय षिवाकान्त ओझाजी–

तदोपरान्त कार्यक्रम के मुख्य अतिथि माननीय प्रो0 षिवाकान्त ओझा जी ने उद्बोधन में कहा कि विकास की अन्धाधुन्ध दौड़ में हम विनाष की ओर बढ़ रहे हैं, पर्यावरण जो हमें जीवन देते है उसे नुकसान पहुँचा रहे है, नष्ट कर रहे हैं, जबकि विकास समाज के लिये होना चाहिये न कि विनाष के लिये। उन्होंने ग्रीन सोषल वर्क विषय लेकर संगोष्ठी आयोजन करने की प्रषंसा की एवं कहा कि ऐसे गम्भीर विषयों पर चर्चायें किया जाना अति आवष्यक है।

माननीय प्रो0 एम0पी0 दुबे जी–

तदोपरान्त माननीय कुलपति, उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विष्वविद्यालय, इलाहाबाद, प्रो0 एम0पी0 दुबे ने अपना अध्यक्षीय उद्बोधन दिया। उन्होंने बताया कि विष्वविद्यालय में ग्रीन सोषल वर्क एक नये विषय के रुप में प्रारम्भ किया जा रहा है और इसी क्रम में लोगों के जागरुक, जानकारी एवं विषय पर समझ बढ़ाने के लिये इस संगोष्ठी का आयोजन किया गया है। उन्होंने कहा कि यह एक नये प्रकार का सामाजिक आन्दोलन है एवं समय एवं आवष्यकता के साथ–साथ आन्दोलनों का स्वरुप भी बदलता रहता है और बदलना भी चाहिये। पर्यावरण एवं विकास एक दूसरे से जुड़े हुये है एवं समाज कार्य दोनों के बीच की एक

कड़ी है। मानव समाज से जुड़े हुये ऐसे विषय जो मुनष्य को सीधे प्रभावित करते है, पर चर्चा कि एवं चिन्तन किये जाने की आवष्यकता है।

शोध पत्र संक्षिप्तिका विमोचन—

उद्घाटन सत्र के अंत में राष्ट्रीय संगोष्ठी 'ग्रीन सोषल वर्क' पर आधारित शोध पत्र संक्षिप्तिका का विमोचन मुख्य अतिथि माननीय प्रो0 षिवाकान्त ओझा, प्राविधिक षिक्षा मंत्री जी द्वारा किया गया है।यह शोध पत्र संक्षिप्तिका के 84 पेजों में 52 शोध पत्रों का सारांष संभावित संकलित किया गया है।

इस सत्र के अन्त में मुख्य अतिथि एवं अन्य अतिथियों को शाल एवं स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया गया।

प्रथम तकनीकि सत्र—

प्रथम तकनीकि सत्र की अध्यक्षता प्रो. आर0एन0 सिंह, हेमवती नन्दन बहुगुणा विष्वविद्यालय, गढ़वाल ने की एवं सह अध्यक्षता डा0 अमिताभ कर एवं संचालन डॉ0 अलका वर्मा, उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विष्वविद्यालय द्वारा किया गया।

इस सत्र में डॉ0 सोनी श्रीवास्तव द्वारा Phytoremediationoy Heavy Metere. A Noval Approach for Enviornment Clean Up. पर डॉ0 स्वाती चौरसिया द्वारा पर्यावरण संरक्षण, डॉ0 अमिता पाण्डेय द्वारा Green Technology and Sustainable Development पर, रंजना जायसवाल (षोध छात्रा) द्वारा Green Social Work Environment Movement in India, डॉ0 आर.बी. चौधरी द्वारा प्राकृतिक आपदा प्रबंधन पर, डॉ. के0के. शुक्ल द्वारा आपदा प्रबन्धन में गैर सरकारी संगठनों की भूमिका, अनुपम श्रीवास्तव (षोध छात्र) द्वारा Nature Disaster Management पर , डॉ0 देवेन्द्र विक्रम सिंह द्वारा संपोष्य विकास और सामाजिक उन्नति पर, डॉ0 अखिलेष कुमार मिश्र द्वारा भारतीय पर्यावरण कानून एवं समाज पर, डॉ0 सतीष चन्द्र कलौंजिया द्वारा जलवायु परिवर्तन, डॉ0 गिरीष कुमार द्विवेदी द्वारा पर्यावरण पर कालीन उद्योग का प्रभाव, डॉ0 राजेष कुषवाहा द्वारा आपदा प्रबंधन, रुपाली (षोध छात्रा) द्वारा Green Social Work: A Small Initiative for Bigger Change, डॉ0 अर्चना त्रिपाठी द्वारा इन्वारमेण्ट मूवमेन्ट इन इण्डिया, डॉ0 मो. अजहर अन्सारी द्वारा पर्यावरण असन्तुलन से घुटता है दम, डॉ0 आर. सी. एस. यादव द्वारा Roal of Community in Green Social Work पर इला चौधरी (षोध छात्रा) द्वारा Development of Green Social Work आदि विषयों पर कुल 16 शोध पत्र प्रस्तुत किये गये।

शोध प्रस्तुतिकरण के उपरान्त सत्र की सह अध्यक्षता कर रहे प्रो0 अमिताभ द्वारा समस्त शोधों का सार प्रस्तुत करते हुए ये कहा गया कि पर्यावरण क्षरण एक गंभीर विषय है और इस पर कार्य किया जाना अति आवष्यक है, पेड़ पौधे हमें कई प्रकार की ऊर्जा देते है इन्हें संरक्षित रखना एवं पोषित करना हमारी जिम्मेदारी है। अगर हम अपने आस—पास के पर्यावरण पर ही ध्यान रखना शुरु कर दे तो काफी हद तक समस्या का समाधान हो सकता है।

द्वितीय तकनीकि सत्र—

द्वितीय तकनीकि सत्र की अध्यक्षता प्रो0 आर0सी0 वैष्य चेयरमैन, जी.आई. एस. प्रकोष्ठ, मोती लाल नेहरु राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, इलाहाबाद, सह अध्यक्षता डॉ0 पी0पी0 दुबे, निदेषक, कृषि विज्ञान विद्याषाखा, उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विष्वविद्यालय, इलाहाबाद द्वारा की गयी तथा सत्र का संचालन डॉ0 दीपषिखा श्रीवास्तव, उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विष्वविद्यालय, इलाहाबाद द्वारा किया गया।

इस सत्र में डॉ0 विनय मिश्रा द्वारा Role of Social Work in Enviroment Degration पर, डॉ0 चन्द्रकान्त कुमार सिंह द्वारा Green ICT with Green Social Work पर, डॉ0 दिनेष सिंह द्वारा Importance of Forest Resources पर, डॉ0 प्रतिभा शुक्ला द्वारा Green Social Work in India पर, डॉ0 मुकेष कुमार द्वारा Effect of Eyes on Environment पर, डॉ0 रीना सिंह द्वारा पर्यावरण प्रदूषण पर मृदुल

प्रतीक पाण्डेय (षोध छात्र) द्वारा Nature Disaster Management पर, डॉ0 स्मिता अग्रवाल द्वारा संस्कृत साहित्य में पर्यावरणीय दृष्टि, तौफिक अहमद द्वारा Role of NGO in Social Mobilization and Skills Development of Rural People पर, डॉ0 अमित पाण्डेय द्वारा Green Economy पर, डॉ0 संगीता पाण्डेय द्वारा इण्डियन इनवारमेण्ट लॉ एण्ड सोसाइटी, डॉ0 दीपषिखा श्रीवास्तव द्वारा समाज में न्याय एवं सामाजिक आन्दोलन डॉ0 रमेष चन्द्र यादव द्वारा पर्यावरणीय आन्दोलन, कु0 मृणालिनी (षोध छात्रा) द्वारा वैदिक साहित्य में पर्यावरण जागरुकता, डॉ0 शालिनी यादव द्वारा श्री भगवतपुराण में पर्यावरण आदि पर कुल 15 शोध पत्र प्रस्तुत किये गये।

शोध पत्रों के प्रस्तुतीकरण के उपरांत सत्र की अध्यक्षता कर रहे प्रो0 आर0सी0 वैष्य ने शोध पत्रों का सार प्रस्तुत करते हुए कहा कि पर्यावरण संरक्षण के साथ–साथ प्राकृतिक आपदाओं से निपटने में भी ग्रीन सोषल वर्क की भूमिका देखी जा सकती है ऐसे विषयों पर लोगों का ध्यान आकृष्ट करने की भी आवष्यकता है।

समापन सत्र–

समापन सत्र के मुख्य अतिथि माननीय प्रो0 पृथ्वीषनाग, कुलपति, महात्मा गाँधी काषी विद्यापीठ, वाराणसी, रहे एवं कार्यक्रम की अध्यक्षता माननीय प्रो0 एम0पी0 दुबे, कुलपति उ0प्र0 रा0ट0 मुक्त विष्वविद्यालय, इलाहाबाद ने की।

माननीय श्री पृथ्वीषनाग–

माननीय श्री पृथ्वीषनाग, कुलपति, महात्मा गाँधी काषी विद्यापीठ वाराणसी ने प्रदूषण नियन्त्रण विषय पर पावर प्वाइंट प्रेजेन्टेषन दिया और प्रतिभागियों को स्पष्ट किया कि पर्यावरण क्षरण एवं प्रदूषण का मानव समाज पर क्या प्रभाव पड़ता है एवं पर्यावरणीय विनाष को किस प्रकार रोका जा सकता है।?

तत्पष्चात संगोष्ठी के दिनभर के क्रिया–कलापों एवं शोध प्रस्तुतियों पर रिपोर्ट प्रस्तुत की गयी। जिसमें स्पष्ट किया गया कि गुजरात, महाराष्ट्र, दिल्ली, हरियाणा, उत्तराखण्ड, उत्तरांचल, असम , मध्यप्रदेष एवं उत्तर प्रदेष से 72 प्रतिभागियों ने संगोष्ठी में प्रतिभाग किया एवं 30 प्रतिभागियों ने अपने शोध पत्र प्रस्तुत किये।

माननीय प्रो0 एम0पी0 दुबे–

तदोपरान्त संगोष्ठी की अध्यक्षता कर रहे माननीय कुलपति उत्तर प्रदेष राजर्षि टण्डन मुक्त विष्वविद्यालय, इलाहाबाद प्रो0 एम.पी. दुबे जी ने अपना अध्यक्षीय उद्बोधन प्रस्तुत किया उन्होंने बताया कि यह विषय एक गम्भीर विषय है और इस पर चर्चा करने की आवष्यकता होने के साथ–साथ इस पर्यावरण को सुरक्षित रखना हमारी नैतिक जिम्मेदारी है और यह हमारे स्वस्थ जीवन के लिये भी आवष्यक है।

इस गम्भीर विषय पर प्रतिभागियों के चिंतन मनन एवं शोध प्रस्तुतीकरण के उपरांत संगोष्ठी का समापन हुआ। संगोष्ठी के अन्त में सभी अतिथियों एवं प्रतिभागियों का धन्यवाद दिया गया एवं प्रमाण पत्र वितरित किये गये। तदोपरान्त राष्ट्रगान द्वारा संगोष्ठी का समापन किया गया।

संगोष्ठी में अतिथियों एवं प्रतिभागियों द्वारा किये गये सुझाव–

1. इस विषय में दो या तीन दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किये जाने का सुझाव दिया गया।
2. इस विषय पर संगोष्ठी के अतिरिक्त कार्यषालायें भी आयोजित करने का सुझाव दिया गया जिससे प्रतिभागी खुल कर अपने विचारों का आदान–प्रदान कर सके एवं समस्या समाधान हेतु कुछ रणनीतियाँ भी बनायी जा सके।
3. प्रतिभागियों के लिये भी यात्रा–व्यय(T.A.) दिये जाने की सुविधा की माँग प्रतिभागियों द्वारा की गयी।
4. संगोष्ठी में प्रस्तुत किये गये शोध पत्रों की प्रोसिडिग्स छपवाने की माँग की गयी।

कार्यक्रम

राष्ट्रीय संगोष्ठी 11मार्च, 2015

प्रातः–	पंजीकरण
	9:30 से 10:30 तक
पूर्वाह्न –	उद्घाटन सत्र
	10:30 से 12:00 तक
पूर्वाह्न –	चाय एवं जलपान
	12:00 से 12:15 तक
मध्याह्न –	प्रथम तकनीकि सत्र
	12:15 से 2:00 तक
मध्याह्न –	भोजनावकाष
	2:00 से 2:30 तक
अपराह्न –	द्वितीय तकनीकि सत्र
	2:30 से 4:00 तक
अपराह्न –	समापन सत्र
	4:00 से 5:00 तक
अपराह्न –	चाय एवं जलपान
	5:00 से 5:15 तक

उद्घाटन सत्र

दिनांक– 11 मार्च, 2015

समय 10:30 से 12:00 तक

मुख्य अतिथि – प्रो0 षिवाकान्त ओझा जी,

प्राविधिक षिक्षा मंत्री,
उत्तर प्रदेष सरकार, उत्तर प्रदेष

अध्यक्षता– प्रो0 एम0पी0 दुबे,
कुलपति,
उत्तर प्रदेष राजर्षि टण्डन मुक्त विष्वविद्यालय,
इलाहाबाद

समापन सत्र–

दिनांक– 11 मार्च, 2015
समय 4:00 से 5:00 तक

मुख्य अतिथि– प्रो. पृथ्वीषनाग,
कुलपति,
महात्मा गाँधी काषी विद्यापीठ वाराणसी,
उत्तर प्रदेष
अध्यक्षता– प्रो0 एम0पी0 दुबे,
कुलपति,
उत्तर प्रदेष राजर्षि टण्डन मुक्त विष्वविद्यालय,
इलाहाबाद

प्रथम तकनीकि सत्र

दिनांक– 11 मार्च 2015

समय– 12:15 से 2:00 तक

अध्यक्षता– प्रो0 आर0एन0 सिंह
भूतर्पूव विभागाध्यक्ष, भूगोल विज्ञान विभाग
हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल, विष्वविद्यालय
श्रीनगर, गढ़वाल, उत्तरांचल

सह अध्यक्षता– प्रो. अमिताभ कर
कृषि एवं तकनीकि, एन0डी0 विष्वविद्यालय,
कुमारगंज फैजाबाद

संचालक– डॉ0 अलका वर्मा,
समाज विज्ञान विद्याषाखा
उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विष्वविद्यालय
इलाहाबाद उत्तर प्रदेष

द्वितीय तकनीकि सत्र

दिनांक– 11 मार्च 2015

समय– 2:30 से 4:00 तक

अध्यक्षता– प्रो0 आर0सी0 वैष्य
चेयरमैन, जी.आई. एस. प्रकोष्ठ,
मोती लाल नेहरु राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान,
इलाहाबाद

सह अध्यक्षता – डॉ0 पी0पी0 दुबे,
निदेषक, कृषि विज्ञान विद्याषाखा,
उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विष्वविद्यालय,
इलाहाबाद उत्तर प्रदेष

संचालक– डॉ0 अलका वर्मा,
समाज विज्ञान विद्याषाखा
उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विष्वविद्यालय
इलाहाबाद उत्तर प्रदेष

उत्तर प्रदेष राजर्षि टण्डन मुक्त विष्वविद्यालय
इलाहाबाद

राष्ट्रीय संगोष्ठी

New Dimensions of Social Work

08.09 मार्च, 2016

प्रतिवेदन

आयोजक

समाज विज्ञान विद्याषाखा

उत्तर प्रदेष राजर्षि टण्डन मुक्त विष्वविद्यालय, इलाहाबाद
सेक्टर–एफ, शान्तिपुरम् (फाफामऊ), इलाहाबाद–211013

Web.www.uprtou.ac.in

राष्ट्रीय संगोष्ठी

New Dimensions of Social Work

08.09मार्च, 2016

संरक्षक

प्रो0 एम.पी. दुबे

संयोजक

डॉ0 गिरीष कुमार द्विवेद्वी

आयोजन सचिव

डॉ0 अलका वर्मा

Schedule

National Seminar
on
New Dimentions of Social Work

08th March, 2016

Date	***Time***	***Programme***	***Venue***
08.03.16 (Tuesday)	9:00 am - 10:30 am	Registration	Saraswati Parisar
	10:30 am - 11:30 am	Inaugural Session	Tilak Shashtrath Sabhagar
	11:30 am - 12:00 noon	***Tea***	
	12.00 noon - 02:00 pm	Technical Session – I	Tilak Shashtrath Sabhagar
	02:00 pm - 02:30 pm	***Lunch***	
	02:30 pm - 04:45 pm	Technical Session – II	Tilak Shashtrath Sabhagar
	04:45 pm - 05:00pm	***Tea***	

09th March, 2016

Date	***Time***	***Programme***	***Venue***
09.03.16 (Wednesday)	10:30 am - 11:45 am	Technical Session– III	Tilak Shashtrath Sabhagar
	11:45 am - 12:00 noon	***Tea***	
	12.00 noon - 01:30 pm	Technical Session– IV	Tilak Shashtrath Sabhagar
	01:30 pm - 02:15 pm	***Lunch***	
	02:15 pm - 03:30 pm	Technical Session– V	Tilak Shashtrath Sabhagar
	03:30 pm - 04:30 pm	Veledictory Session	Tilak Shashtrath Sabhagar
	04:30 pm - 05:00 pm	***Tea & Certificate Distribution***	

प्रतिवेदन

08 मार्च 2016

संगोष्ठी का प्रारम्भ मुख्य अतिथि श्री राजन शुक्ला मण्डल आयुक्त, इलाहाबाद, अध्यक्ष प्रो. एम.पी. दुबे, माननीय कुलपति, उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहबाद, मुख्य वक्ता प्रो. ए.एन. सिंह, समाज कार्य विभाग, काशी विद्यापीठ, वाराणसी द्वारा दीप प्रज्ज्वलन कर एवं माँ सरस्वती प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर किया गया। कार्यक्रम के प्रारम्भ में सरस्वती वन्दना प्रस्तुत किया गया एवं अतिथियों का स्वागत पुष्प गुच्छ प्रदान कर किया गया।

उद्घाटन सत्र–

संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि श्री राजन शुक्ला जी मण्डल आयुक्त इलाहाबाद, संगोष्ठी के अध्यक्ष प्रो. एम.पी. दुबे, माननीय कुलपति, उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहबाद, मुख्य वक्ता प्रो. ए.एन. सिंह, समाज कार्य विभाग, काशी विद्यापीठ, वाराणसी रहे।

डॉ. श्रुति (सह संयोजक)–

संगोष्ठी के प्रारम्भ में सह संयोजक डॉ. श्रुति ने सभी अतिथियों का विस्तृत परिचय दिया तथा सभी अतिथियों एवं प्रतिभागियों का स्वागत किया।

डॉ. गिरीष कुमार द्विवेदी (सह संयोजक)–

संगोष्ठी के संयोजक डॉ. गिरीश कुमार द्विवेदी ने विश्वविद्यालय की विभिन्न गतिविधियों एवं विकास यात्रा से सभी अतिथियों एवं प्रतिभागियों को परिचित कराया।

डॉ0 अलका वर्मा (आयोजन सचिव)–

संगोष्ठी की आयोजन सचिव डॉ0 अलका वर्मा ने संगोष्ठी के उद्देश्य एवं संगोष्ठी के विषय प्रवर्तन पर प्रकाश डाला।

प्रो. ए.एन. सिंह (मुख्य वक्ता)–

संगोष्ठी के मुख्य वक्ता प्रो. ए.एन. सिंह, समाज कार्य विभाग, काशी विद्यापीठ, वाराणसी ने प्रतिभागियों को स्पष्ट किया कि समाज कार्य क्या है इसके विषय क्षेत्र क्या है, उन्होंने बताया कि समाज कार्य सभी विषयों से जुड़ा हुआ है और समाज में आने वाली विभिन्न समस्यायें एवं उसका समाधान इसका विषय क्षेत्र है उन्होंने समाज कार्य की विभिन्न प्रणालियों और उसके उपयोग के सम्बन्ध में भी विस्तृत चर्चा की।

श्री राजन षुक्ला (मुख्य अतिथि)–

संगोष्ठी के मुख्य अतिथि श्री राजन शुक्ला मण्डल आयुक्त, इलाहाबाद ने अपने उद्बोधन में कहा कि समाज कार्य का व्यवसायिक स्वरुप भले ही हमारे लिए नया हो परन्तु इसकी नींव बहुत पूर्व भारत की संस्कृति में पड़ चुकी थी। जब भी हम किसी पीड़ित व्यक्ति को देखे तो उसकी पीड़ा दूर करने की भावना सदैव हमारे हृदय में होनी चाहिए और सही मायने में यही समाज कार्य है। फिर उन्होने कहा कि समाज कार्य के विभिन्न आयामों पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

प्रो. एम.पी. दुबे, (अध्यक्ष)–

तद्ोपरान्त माननीय कुलपति, उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहबाद, प्रो. एम.पी. दुबे जी ने अपना अध्यक्षीय उद्बोधन दिया। उन्होंने बताया कि समाज कार्य एक बहुत ही महत्वपूर्ण विषय है और इसके अन्तर्गत लगभग सभी विषयों का समावेश है, इसके विभिन्न आयाम किसी न किसी विषय से सम्बन्धित होते हैं। उन्होंने बताया कि सामाजिक विकास के साथ ही साथ सामाजिक समस्याओं में भी परिवर्तन होता रहता है, इस कार्य का विषय क्षेत्र भी परिवर्तित होता रहता है उन्होंने बताया कि इस संगोष्ठी में ऐसे ही कई महत्वपूर्ण विषयों को लिया गया है जिस पर चर्चा करना आवश्यक है।

ई–सॉविनियर का विमोचन–

राष्ट्रीय संगोष्ठी 'न्यू डाइमेन्सन ऑफ सोशल वर्क' पर प्राप्त शोध पत्रों के सारांश का विमोचन ई सॉविनियर के रुप में किया गया। इस ई–सॉविनियर में 76 शोध पत्रों का सारांश सम्मिलित किया गया है। इस सत्र के अन्त में मुख्य अतिथियों को शॉल व स्मृति चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया गया।

डॉ. मृदुल श्रीवास्तव–

उद्घाटन सत्र के अन्त में डॉ. मृदुल श्रीवास्तव, परीक्षा नियंत्रक, उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, ने सभी अतिथियों, प्रतिभागियों, अधिकारियों एवं मीडियाकर्मीयो का संगोष्ठी में उपस्थित होने एवं प्रतिभाग करने के लिये धन्यवाद ज्ञापित किया।

प्रथम तकनीकि सत्र–

प्रथम तकनीकि सत्र की अध्यक्षता प्रो. बेचन शर्मा, जैव रसायन विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद द्वारा की गयी एवं सत्र का संचालन संगोष्ठी की आयोजन सचिव डॉ0 अलका वर्मा द्वारा किया गया।

इस सत्र में सुपर्णा भारती द्वारा पंचायती राज सिस्टम, श्री तापस पाल द्वारा रोल ऑफ आई.सी.टी. एण्ड संस्टेबल डेवलपमेन्ट, डॉ. अखिलेश सिंह द्वारा पर्यटन विकास पर आई.सी.टी. की भूमिका पर, आन्या श्रीवास्तव द्वारा Sensitivity of global climate change and India Halbrat, सौम्या वर्मा द्वारा क्राइम, डॉ. अमिताभ कर एवं डॉ. श्री चन्द द्वारा Utiizing of Solid waste and water in villages डॉ. मृदुल श्रीवास्तव द्वारा Present development disorder in India, डॉ. राजेन्द्र कुमार शास्त्री, शैलेन्द्र प्रताप सिंह द्वारा Review of Solid Waste management facility for Allahabad city, अली युसुफ द्वारा Crime investigation system in India, अविनाश शुक्ला द्वारा ICT A road map towards economic Reforms, डॉ. विजय सिंह पटेल द्वारा ठोस अपशिष्ट प्रबन्ध पर, डॉ. आर. बी. चौधरी द्वारा विश्वव्यापी उष्णता पर डॉ. ज्योत्सन सिन्हा, इफितयार अहमद द्वारा Vision Digital India पर, स्थापना कुमारी द्वारा Role of ICT in Sustainable Development ,डॉ. अंजली यादव द्वारा Economic Reforms for Social work during Firoz shah Tughlua Period, पर कुल 15 शोध पत्र प्रस्तुत किये गये।

शोध प्रस्तुतीकरण के उपरान्त सत्र की अध्यक्षता कर रहे प्रो. बेचन शर्मा ने समस्त शोधों का सार प्रस्तुत करते हुए यह स्पष्ट किया कि ग्लोबल वार्मिंग का क्या प्रभाव विश्व पर पड़ रहा है।

द्वितीय तकनीकि सत्र–

द्वितीय तकनीकि सत्र की अध्यक्षता डॉ. अमिताभ कर, कृषि विभाग, जौनपुर विश्वविद्यालय द्वारा की गयी। इस सत्र का संचालन संगोष्ठी की आयोजन सचिव डॉ0 अलका वर्मा द्वारा किया गया।

इस तकनीकि सत्र में प्रेम कुमार पटेल द्वारा अपराध प्रशासन पद्धति पर डॉ. विवेक कुमार सिंह, डॉ. संतोष कुमार द्वारा Changing Dimension's of Agriculture पर, भानु कुशवाहा द्वारा ग्लोबल वार्मिंग के प्रभाव से जल की स्थिति का अध्ययन, डॉ. अमित पाण्डेय द्वारा Ecinomic Reforms, Growth and Development in India पर, तौफिक अहमद एवं आन्या श्रीवास्तव द्वारा Employee Occupational Health and Safety Measures and Indian Perpective, आरती एवं अनुपम रावत द्वारा Local Impact of Indian economic the global worming पर अभिजीत सिंह द्वारा Global Warming and its Impact डॉ. दिनेश कुमार सिंह द्वारा पंचायती राज व्यवस्था एवं ग्रामीण विकास पर नन्दिता त्रिपाठी द्वारा पंचायती राज का विकास पर नुसरत रिजवी द्वारा Conflict and Peace Building पर, प्रो. आनन्द बहादुर सिंह व अश्वनी कुमार सिंह गॉधी शान्ति विकास, लवलेश प्रसाद तिवारी द्वारा Solid Waste Management पर, दिपिका द्वारा ग्लोबल वार्मिग पर डॉ. पवन कुमार त्रिपाठी द्वारा Development of Panchayati Raj System, प्रो. राजेश कुमार दुबे द्वारा Green Technology for glorious India पर, डॉ. श्रुति द्वारा Global Warming: Reasons and Removels पर शोध पत्र प्रस्तुत किये गये। इस सत्र में कुल 16 शोध पत्र प्रस्तुत किये गये।

इस सत्र के अन्त में डॉ. अमिताभ कर ने सभी तथ्यों का सार प्रस्तुत करते हुए कहा कि सामाजिक विकास में इन सभी आयामों पर ध्यान देने के साथ ही साथ कृषि पर भी ध्यान देना आवश्यक है क्यों कि हमारे देश का विकास कृषि विकास पर ही सम्भव है। उन्होंने कृषि विकास के महत्व पर प्रकाश डाला।

09 मार्च 2016

तृतीय तकनीकि सत्र–

तृतीय तकनीकि सत्र की अध्यक्षता डॉ.रोहित मिश्रा समाज कार्य विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ ने की इस सत्र का संचालन डॉ. अलका वर्मा ने किया।

इस सत्र में डॉ0 ममता भट्नागर, मिनाक्षी श्रीवास्तव द्वारा डिजीटल क्रान्ति से परिवर्तित होता समाज, विनाय त्रिपाठी द्वारा Commodity Futures Trade- Dimensions of Social Work and fair treatment पर, गणेश प्रसाद एवं एस.के. द्विवेदी द्वारा Impact of Global warming on environment and Human Health पर, डॉ. बाबू लाल यादव, डा. विवेक कुमार राय द्वारा प्रकृति और पर्यावरण के अनुकूल विकास पर अखिलिश कुमार सिंह द्वारा ग्लोबल वार्मिंग जागरुकता में समाज कार्य की भूमिका, नीलम रानी द्वारा पंचायती राज विकास पर , रिचा सिंह द्वारा Effect of Global warming in Indian Agricultural Context पर, संजय सिंह द्वारा Children with disabilities पर, प्रीती सिंह द्वारा ग्लोबल वार्मिंग पर, डॉ. स्मिता द्वारा पंचायती राज व्यवस्था का विकास एवं सामाजिक महत्व, कु0 मृणालिनी द्वारा वैदिक कालीन अर्थतंत्र का स्वरुप व महत्व, स्वपनिल त्रिपाठी द्वारा Crime with women and children पर मोनिसा पाण्डेय द्वारा New Dimensions of Social Work पर शोध पत्र प्रस्तुत किये गये। इस सत्र में कुल 15 शोध पत्र प्रस्तुत किये गये।

इस सत्र के अंत में डॉ0 रोहित मिश्रा ने सभी शोध पत्रों का सार प्रस्तुत करते हुये कहा कि समाज कार्य के आयामों निरन्तर परिवर्तित हो रहा है और नये आयामों पर ध्यान देने एवं कार्य योजना बनाये जाने की आवश्यकता है।

चतुर्थ तकनीकि सत्र–

चतुर्थ तकनीकि सत्र की अध्यक्षता डॉ. राहुल पटेल मानव विज्ञान विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद द्वारा की गयी। सत्र का संचालन संगोष्ठी की आयोजन सचिव डॉ0 अलका वर्मा द्वारा किया गया।

इस तकनीकि सत्र में आकांक्षा सिंह द्वारा Kinship system in Toda tribe and upcoming changes पर, अविनाश कुमार आनन्द द्वारा टोडा जनजाति में भोजन भोज्य पदार्थ एवं भोजन सम्बन्धी आदतें, हर्षित यादव द्वारा टोडा जनजाति में भौतिक संस्कृति और उसमें होने वाले परिवर्तन पर फरहत तसलीन द्वारा Impact of Modernization on Todas of Nilgiri पर, गौसिया नाज द्वारा मुस्लिम सुन्नी समाज में विवाह के बदलते स्वरुप में मुस्लिम समाज में पड़ता प्रभाव पर नेहा सिंह द्वारा A contemporary objervation of Identity and ethnicity among the Toda Tribal women of Nilgiri Hills of Tamilnadu पर डॉ0 राहुल द्वारा The Todas of Udhagamandalam पर, राकेश कुमार द्वारा टोडा जनजाति में समस्यायें, रंजना यादव द्वारा टोडा जनजाति में जनांकिकि एक अध्ययन, सर्वेश कुमार द्वारा टोडा जनजाति में राजनैतिक संगठन, उत्कर्ष द्वारा टोडा में धार्मिक संकुल, सोमेश कुमार द्वारा Attribr in transition पर, विनय कुमार द्वारा टोडा जनजाति में खेल कूद, डॉ. जी.के. द्विवेदी द्वारा Education for peace पर अपना शोधपत्र प्रस्तुत किया गया। इस सत्र में कुल 15 शोध पत्र प्रस्तुत किया गया।

सत्र के अंत में सत्र की अध्यक्षता कर रहे डॉ. राहुल पटेल टोडा जनजाति की परम्पराओं, संस्कृति, व्यवहार पर प्रकाश डाला।

पंचम तकनीकि सत्र–

पंचम तकनीकि सत्र की अध्यक्षता डॉ. अमित बनर्जी द्वारा की गयी। इस तकनीकि सत्र का संचालन डॉ. अलका वर्मा ने किया।

इस तकनीकि सत्र में प्रशान्त सिंह ने Governance reform in India पर राखी जयसवाल ने Solid Waste Management पर, डॉ. पवन कुमार सिंह एवं डॉ. राजीव उर्फ पिन्टू ने Prospects and challenges of Indian economic पर डॉ. विनय कुमार मिश्रा ने Role of ICT in sustainable Development पर, डॉ. नीलम सिंह ने Solid Waste Management पर, डॉ. रोहित मिश्रा ने International standards of social work education and practic पर, स्वतंत्र कुमार ने भारत के विकास में पंचायती राज व्यवस्था की भूमिका पर, डॉ. विजय सिंह पटेल ने Research paper on solid waste management पर, डॉ. आर.बी. चौधरी ने विश्वव्यापी उष्णता पर, इफियार अहमद एवं डॉ. ज्योत्सना सिंन्हा ने vision digital India पर, तुषार रंजन ने पंचायती राज

व्यवस्था का उद्भव एवं विकास, श्रवण कुमार द्वारा जलवायु परिवर्तन कारण और प्रभाव पर डॉ. गौरव संकल्प द्वारा Climate change पर आई.बी. पाण्डेय द्वारा Role of NGO in Social work पर कुल 15 शोध पत्र प्रस्तुत किये गये।

समापन सत्र–

संगोष्ठी के समापन सत्र के मुख्य अतिथि प्रो. के.बी. पाण्डेया, कुलपति नेहरु ग्राम भारती विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, विषिष्ट अतिथि श्री गौरव कृष्ण बंसल, निदेशक, उत्तर मध्य सांस्कृतिक केन्द्र, इलाहाबाद एवं अध्यक्ष प्रो. एम.पी. दूबे, माननीय कुलपति उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद रहे।

डॉ. श्रुति (सह–संयोजक)–

संगोष्ठी के समापन सत्र में डॉ. श्रुति संगोष्ठी की सह संयोजक द्वारा सभी अतिथियों के बारे में विस्तृत परिचय दिया गया एवं सभी अतिथियों का स्वागत किया गया।

डॉ. गौरव संकल्प (उप आयोजन सचिव)–

डॉ. गौरव संकल्प संगोष्ठी के उप आयोजन सचिव द्वारा दो दिवसीय संगोष्ठी New Dimensions of Social work पर दो दिन के क्रियाकलापों एवं शोध प्रस्तुतियों पर रिर्पोट प्रस्तुत की गयी जिसमें स्पष्ट किया गया कि महाराष्ट्र, दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान, मध्यप्रदेष, उतरांचल, उत्तराखंड एवं उत्तर प्रदेश राज्यों से कुल 93 प्रतिभागियों ने भाग लिया एवं 75 प्रतिभागियों ने अपने शोध प्रत्र प्रस्तुत किये।

रिर्पोट प्रस्तुती करण के पश्चात् सभी अतिथियों को स्मृति चिन्ह एवं अंग वस्त्रम द्वारा सम्मानित किया गया।

प्रो. के.बी. पाण्डेया (मुख्य अतिथि)–

संगोष्ठी के समापन सत्र में मुख्य अतिथि प्रो. के.बी. पाण्डेया जी ने कहा कि समाज कार्य एक अत्यन्त महत्वपूर्ण विषय है और इसके विभिन्न आयामों पर वास्तव में कार्य करने की आवश्यकता है उन्होंने बताया कि संगोष्ठी में जो उप विषय रखे गये उस पर कार्य करने के साथ–साथ जन जागरुकता

की भी विशेष आवश्यकता है एवं अगर सही रणनीति बना कर कार्य योजना तैयार की जाये तो निश्चित सफलता प्राप्त होती है।

श्री गौरव कृष्ण बंसल (विषिष्ट अतिथि)–

संगोष्ठी के समापन सत्र के विशिष्ट अतिथि श्री गौरव कृष्ण बंसल जी ने यद्यपि वह सामाजिक कार्यकर्ता नही है फिर भी समाज कार्य के विभिन्न पक्ष उनसे अछूते नहीं हैं। समाज कार्य हर व्यक्ति के अंदर किसी न किसी रुप में विद्यमान है। हम किसी न किसी रुप में समाज कार्य करते है। बस धीरे–धीरे लोगों में संवेदनाओं की कमी हो रही है जिसे बढ़ाये जाने की आवष्यकता है।

प्रो. एम.पी. दूबे (अध्यक्ष)–

संगोष्ठी समापन सत्र के अध्यक्ष माननीय कुलपति प्रो.एम.पी. दूबे जी ने सर्वप्रथम संगोष्ठी के सफल आयोजन के लिये संगोष्ठी आयोजन समिति के सदस्यों को बधाई दी तत्पश्चात उन्होंने कहा कि समाज कार्य कोई नया विषय नहीं है। बल्कि कोई ऐसा विषय नही है जो समाज कार्य से सम्बन्धित नहीं है उन्होंने कार्ल मार्क्स के राजनैतिक सिद्धान्त को स्पष्ट करते हुए बताया कि किस प्रकार उसका राजनैतिक चिन्तन समाज कार्य से सम्बन्धित था।

डॉ. गिरीष कुमार द्विवेदी (संयोजक)–

संगोष्ठी के अंत में संगोष्ठी के संयोजक डॉ. गिरीश कुमार द्विवेदी जी संगोष्ठी आयोजन समिति के सदस्यों की ओर से उद्घाटन एवं समापन सत्र के सभी अतिथियों का धन्यवाद किया और कहा कि सभी अतिथियों के अमूल्य उद्बोधन से हम विश्वविद्यालय एवं सभी प्रतिभागीगण लाभान्वित हुये हैं तत्पश्चात् उन्होंने सभी प्रतिभागियों, अधिकारियों, कर्मचारियों, मीडियाकर्मियों का धन्यवाद दिया जिनके सहयोग से संगोष्ठी का सफलतापूर्वक आयोजन किया जा सका है।

तदोपरान्त राष्ट्रगान द्वारा इस दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का समापन किया गया एवं प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरित किये गये।

डॉ. अलका वर्मा
(आयोजन सचिव)

<u>उद्घाटन सत्र</u>

दिनांक– 08 मार्च, 2016
समय 10:30 से 11:30 तक

मुख्य अतिथि –श्री राजन शुक्ला
मण्डल आयुक्त,
इलाहाबाद

मुख्य वक्ता – प्रो. ए.एन. सिंह
समाज कार्य विभाग
महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ
वाराणसी

अध्यक्षता– प्रो0 एम0पी0 दुबे,
कुलपति,
उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय,
इलाहाबाद,

समापन सत्र

दिनांक– 09 मार्च, 2016
समय 3:30 से 4:30 तक

मुख्य अतिथि– प्रो. के0 वी0 पाण्डेया
कुलपति,
नेहरू ग्राम भारती
इलाहाबाद

विषिष्ट अतिथि– श्री गौरव कृष्ण बसंल
निदेशक, मध्य सांस्कृतिक केन्द्र
इलाहाबाद

अध्यक्षता– प्रो0 एम0पी0 दुबे,
कुलपति,
उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय,
इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश

प्रथम तकनीकि सत्र

दिनांक– 08 मार्च 2016, समय– 12:00 से 02:00 तक

अध्यक्षता– प्रो0 बेचन शर्मा
बायो केमिस्ट्री विभाग,
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।

सह अध्यक्षता— डॉ0 दिनेश सिंह
रसायन विभाग,
उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय
इलाहाबाद

संचालक— डॉ0 अलका वर्मा,
समाज विज्ञान विद्याशाखा
उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय
इलाहाबाद

द्वितीय तकनीकि सत्र

दिनांक— 08 मार्च 2016, समय— 02:30 से 04:45 तक

अध्यक्षता— प्रो. अमिताभ कर
कृषि एवं तकनीकि विभाग, जौनपुर विश्वविद्यालय,
जौनपुर

सह अध्यक्षता— डॉ0 अतुल मिश्रा
दर्शन शास्त्र विभाग
उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय
इलाहाबाद

संचालक— डॉ0 अलका वर्मा,
समाज विज्ञान विद्याशाखा
उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय
इलाहाबाद

तृतीय तकनीकि सत्र

दिनांक— 09 मार्च 2016, समय— 10:30 से 11:45 तक

अध्यक्षता— डॉ0 रोहित मिश्रा
समाज कार्य विभाग

लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

सह अध्यक्षता– डॉ0 गौरव संकल्प
प्रबन्धन विद्याशाखा
उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय
इलाहाबाद

संचालक– डॉ0 अलका वर्मा,
समाज विज्ञान विद्याशाखा
उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय
इलाहाबाद

चतुर्थ तकनीकि सत्र

दिनांक– 09 मार्च 2016, समय– 12:00 से 01:30 तक

अध्यक्षता– डॉ0 राहुल पटेल
मानव विज्ञान विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

सह अध्यक्षता– डॉ0 श्रुति
सांख्यिीकी विभाग
उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय
इलाहाबाद

संचालक– डॉ0 अलका वर्मा,
समाज विज्ञान विद्याशाखा
उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय
इलाहाबाद

पंचम तकनीकि सत्र

दिनांक– 09 मार्च 2016, समय– 02:15 से 03:30 तक

अध्यक्षता– डॉ0 अमित बनर्जी
सामाज कार्य
इलाहाबाद

सह अध्यक्षता– डॉ0 रूचि बाजपेयी
हिन्दी विभाग
उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय
इलाहाबाद

संचालक– डॉ0 अलका वर्मा,
समाज विज्ञान विद्याशाखा
उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय
इलाहाबाद

उद्घाटन सत्र

दिनांक– 08 मार्च, 2016

संगोष्ठी में संचालन करती हुई डॉ. रूचि बाजपेई

विश्वविद्यालय की गतिविधियों से परिचय करवाते हुये

डॉ. गिरीश कुमार द्विवेदी (संगोष्ठी संयोजक)

विषय प्रर्वतन प्रस्तुत करती हुयी डॉ. अलका वर्मा (संगोष्ठी आयोजन सचिव)

अतिथियों को अंगवस्त्रम एवं स्मृति चिन्ह प्रदान करते हुये

प्रो0 एम0पी0 दुबे जी, माननीय कुलपति

श्री राजन शुक्ला मण्डल आयुक्त, इलाहाबाद
(मुख्य अतिथि) अपना उद्बोधन प्रस्तुत करते हुए

संगोष्ठी में उपस्थित प्रतिभागीगण

प्रो. ए.एन. सिंह, समाज कार्य विभाग, महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी (मुख्य वक्ता) अपना उद्बोधन प्रस्तुत करते हुए

प्रो0 एम0पी0 दुबे जी, माननीय कुलपति, उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद अध्यक्षीय उद्बोधन प्रस्तुत करते हुए

समापन सत्र

दिनांक– 09 मार्च, 2016

अतिथियों का स्वागत एवं परिचय देते हुये
डॉ0 श्रुति (संगोष्ठी सह संयोजक)

अतिथियों को अंगवस्त्रम एवं स्मृति चिन्ह प्रदान करते हुये
प्रो0 एम0पी0 दुबे जी, माननीय कुलपति
उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय

माननीय कुलपति प्रो0 एम0पी0 दुबे जी को अंगवस्त्रम एवं स्मृति चिन्ह प्रदान करते हुये डॉ. गिरीश द्विवेदी (संगोष्ठी संयोजक)

संगोष्ठी रिर्पोट प्रस्तुत करते हुए डॉ. गौरव संकल्प (संगोष्ठी उप आयोजन सचिव)

श्री गौरव कृष्ण बंसल, निदेशक उत्तर मध्य सांस्कृतिक केन्द्र, इलाहाबाद (विशिष्ट अतिथि) अपना उद्बोधन प्रस्तुत करते हुए

संगोष्ठी में उपस्थित प्रतिभागीगण

प्रो. के.बी. पाण्डेया, कुलपति नेहरू ग्राम भारती, प्रो0 एम0पी0 दुबे जी, माननीय कुलपति,
उ0प्र0 राजर्षि इलाहाबाद (मुख्य अतिथि) अपना उद्बोधन प्रस्तुत करते हुए टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय,
इलाहाबाद अध्यक्षीय

उद्बोधन प्रस्तुत करते हुए

t.com इलाहाबाद, बुधवार, 9 मार्च 2016, फाल्गुन मास कृष्ण पक्ष अमावस्या, संवत् 2072 विक्रमी वर्ष-9, अंक-144,

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

डेली न्यूज़ ऐक्टिविस्ट

फैजाबाद ■ कानपुर

नैतिक हों सेवा के सरोकार: मंडलायुक्त

डेली न्यूज़ नेटवर्क

इलाहाबाद। समाज कार्य के नवीन आयाम जन कल्याण हेतु अग्रसर रहे न कि किसी स्वार्थ की प्रेरणा से। समाज कार्य एक ऐसी गतिविधि है जो मानव स्वभाव से जुड़ी है। समय के साथ-सांथ समाज कार्य आयामों में परिवर्तन हुआ है। यह बातें मंडलायुक्त राजन शुक्ला ने कहीं। वे

- **मुविवि में समाज कार्य पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी**

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय (मुविवि) के तत्वावधान में आयोजित 'समाज कार्य के नए आयाम' विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन अवसर बोल रहे थे।

श्री शुक्ला ने कहा कि मानव समाज में अच्छी और बुरी दोनों ही शक्तियां रही हैं और उनमें संघर्ष शाश्वत तौर पर रहा है और रहेगा। कमजोर वर्ग के उत्थान के लिए कार्य करने की आवश्यकता है। परिवार के अन्दर भी कमजोर वर्ग है। कहा, सेवा के सरोकार नैतिक होने चाहिए। महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ वाराणसी के समाज कार्य विभाग के अध्यक्ष प्रो. अमरनाथ सिंह ने कहा कि मनुष्य की पीड़ा से प्रभावित होना और उसकी मुक्ति के लिए सहयोग करने की बलवती मानवीय भावना तथा मानवीय करूणा ही समाज कार्य की जननी है। कुलपति प्रो. एमपी दुबे ने कहा कि गरीबी से सामाजिक असंतुलन आता है। अत: सामाजिक समानता एवं विकास हेतु गरीबी उन्मूलन बहुत जरूरी है। कहा, गरीबी, बीमारी, अशिक्षा, अज्ञानता, बेकारी, सम्पत्ति विहीन तथा निठल्लापन ये सभी बहुत बड़ी बुराइयां हैं। राज्य का यह कर्तव्य है कि इन बुराइयों से समाज को छुटकारा दिलाए। विषय प्रवर्तन आयोजन सचिव डॉ. अलका वर्मा व अतिथियों का स्वागत डॉ. श्रुति ने किया। डॉ. गिरीश कुमार द्विवेदी ने सेमिनार के बारे में जानकारी दी। संचालन डॉ. रूचि बाजपेयी तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ. मृदुल श्रीवास्तव ने किया। इस अवसर पर सेमिनार के ई-सोविनियर का विमोचन किया गया। संगोष्ठी का समापन बुधवार, 9 मार्च को होगा।

inext
www.inextlive.com — आई नेक्स्ट
Allahabad, Agra, Kanpur, Bareilly, Dehradun, Gorakhpur, Indore, Jamshedpur, Lucknow, Meerut, Patna, Ranchi
I next, Allahabad, 9 March 2016

सामाजिक कार्य करने से और बेहतर बनेगा माहौल

» मुविवि में समाज कार्य पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी शुरू

allahabad@inext.co.in

ALLAHABAD (8 March): उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन ओपन यूनिवर्सिटी के तत्वावधान में दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया. जिसका विषय समाज कार्य के नए आयाम था. सरस्वती परिसर के लोकमान्य तिलक शास्त्रार्थ सभागार में आयोजित कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए मुख्य अतिथि इलाहाबाद मंडल आयुक्त राजन शुक्ला ने कहा कि समाज कार्य के नवीन आयाम समसामयिक आवश्यकताओं के अनुरूप जन कल्याण हेतु स्वाभाविक रूप से अग्रसर रहे, न कि किसी स्वार्थ की प्रेरणा से.

आगे आएं सुयोग्य व्यक्ति

उन्होंने कहा कि सेवा के सरोकार नैतिक होने चाहिए. मुख्य वक्ता महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ वाराणसी के समाज कार्य विभाग के अध्यक्ष प्रो. अमरनाथ सिंह ने कहा कि समाज कार्य में विभिन्न क्षेत्र के सुयोग्य व्यक्तियों को आगे आना चाहिए. अध्यक्षता करते हुए वीसी प्रो. एमपी दुबे ने कहा कि मानवाधिकार की अवधारणा को ध्यान में रखकर विकास का अधिकार एवं वातावरणीय अधिकार आदि नए अधिकारों को भी मानवाधिकार का दर्जा मिल गया है.

बुराइयों से दिलाएं निजात

उन्होंने कहा कि गरीबी, बीमारी, अशिक्षा, अज्ञानता, बेकारी, सम्पत्ति विहीन होना ये बहुत बड़ी बुराइयां हैं. राज्य का कर्तव्य है कि इन बुराईयों से समाज को छुटकारा दिलाए. संयुक्त विकास आयुक्त सुरेश चन्द्र ने कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं को सशक्त करने की आवश्यकता है. धन्यवाद ज्ञापन परीक्षा नियंत्रक डॉ. मृदुल श्रीवास्तव ने किया.

PIC: I NEXT

मुविवि में आयोजित नेशनल सेमिनार में शिरकत करने पहुंचे कमिश्नर इलाहाबाद राजन शुक्ला.

इलाहाबाद, गुरुवार, 10 मार्च, 2016

जनसंदेश टाइम्स

परख सच की

इलाहाबाद, वाराणसी, लखनऊ, कानपुर एवं गोरखपुर से प्रकाशित

सामाजिक कार्य में नैतिकता एवं पारदर्शिता की आवश्कयता : बंसल

मुविवि मे समाज कार्य के नवीन आयामों विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का समापन

इलाहाबाद। उ0प्र0 राजर्षि टण्डंन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद के तत्वावधान में मंगलवार को लोकमान्य तिलक शास्त्रार्थ सभागार में 'समाज कार्य के नवीन आयाम' विषय पर आयोजित ,दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन सत्र के मुख्य अतिथि नेहरू ग्राम भारती विश्वविद्यालय, इलाहाबाद के कुलपति प्रो. केबी पाण्डेय ने कहा कि सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों का आज ह्रास हो रहा है। प्रो. पाण्डेय ने शिक्षाविदों से आहवान किया कि आज वृद्ध एवं महिलाओं को सुरक्षा एवं सशक्तीकरण के क्षेत्र में कार्य करें जिससे उन्हें देखभाल एवं सुरक्षा महसूस हो सके।

मुविवि में गोष्ठी के दौरान बोलते गौरव कृष्ण बंसल

अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. एमपी दुबे ने कहा कि समाज काय्र एक नया विषय है और इसमें विभिन्न विषयों का समावेश है। प्रो. दुबे ने कहा कि जिस तरह से महिलायें आज प्रत्येक क्षेत्र में अपनी विशिष्टता एवं पहचान को सिद्ध कर रही हैं, वह एक अतुलनीय प्रयास है। इससे समाज के विकास में एक नई गति मिलेगी। उन्होंने कहा कि हम सामाजिक विकास एवं पर्यावरण विकास आज की आवश्यकता है।

संगोष्ठी के विशिष्ठ अतिथि गौरव कृष्ण बंसल, निदेशक, उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, इलाहाबाद ने कहा कि अनुशासन से ही व्यक्ति एक अच्छा समाजसेवी बन सकता है। उन्होंने कहा कि समाज में केवल न्याय होना ही आवश्यक नहीं है वरन उसका प्रदर्शित होना भी आवश्यक है। प्रारम्भ में अतिथियों का स्वागत संगोष्ठी की सह-संयोजक डा. श्रुति ने किया। दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी की रिपोर्ट आयोजन-उपसचिव डॉ0 गौरव संकल्प ने प्रस्तुत किया। संगोष्ठी का संचालन डा. रूचि वाजपेई तथा धन्यवाद ज्ञापन संयोजक डॉ. जीक्रेद्विवेदी ने दिया। संगोष्ठी में 07 राज्यों के लगभग 100 प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया।

अमर उजाला

हरियाणा | दिल्ली | चंडीगढ़ | पंजाब | उत्तर प्रदेश | उत्तराखंड | हिमाचल | जम्मू-कश्मीर

वर्ष 19 अंक 265 पृष्ठ : 16 मूल्य : चार रुपये

इलाहाबाद | बृहस्पतिवार | 10 मार्च 2016

सामाजिक, नैतिक मूल्यों में ह्रास है चिंता

इलाहाबाद (ब्यूरो)। उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय में 'समाज कार्य के नवीन आयाम' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय गोष्ठी में वक्ताओं ने सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों में गिरावट पर चिंता जताई। मुख्य अतिथि नेहरू ग्राम भारती विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर केबी पांडेय ने कहा कि नैतिक मूल्यों में ह्रास हो रहा है। उन्होंने शिक्षाविदों से अपील की कि वे वृद्ध एवं महिलाओं की सुरक्षा तथा सशक्तिकरण के लिए काम करें। अध्यक्षता कर रहे कुलपति प्रोफेसर एमपी दुबे ने कहा कि समाज कार्य नया विषय है। इसमें कई विषयों का समावेश है। उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र के निदेशक गौरव कृष्ण बंसल ने कहा कि अनुशासन से ही व्यक्ति एक अच्छा समाजसेवी बन सकता है। सह संयोजक डॉ.श्रुति ने अतिथियों का स्वागत किया। आयोजन उपसचिव डॉ. गौरव ने गोष्ठी के बारे में बताया। डॉ.रुचि वाजपेई ने संचालन तथा संयोजक डॉ.जीके द्विवेदी ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

समय से पहले समय पर नजर

नगर संस्करण

न्यायाधीश

डाक रजिस्ट्रेशन नं.- ए.डी.34/2015-17

इलाहाबाद | गुरूवार | 10 मार्च 2016 | संस्थापक स्व0 डा0 रघुवीर चन्द जिन्दल

सामाजिक कार्य में नैतिकता एवं पारदर्शिता की आवश्यकताः बंसल

मुविवि में समाज कार्य के नवीन आयामों विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का समापन

इला0। उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद के तत्वावधान में मंगलवार को लोकमान्य तिलक शास्त्रार्थ सभागार में 'समाज कार्य के नवीन आयाम' विषय पर आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन सत्र के मुख्य अतिथि नेहरू ग्राम भारती विश्वविद्यालय, इलाहाबाद के कुलपति प्रो0 के0बी0 पाण्डेय ने कहा कि सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों का आज ह्रास हो रहा है। प्रो0 पाण्डेय ने शिक्षाविदों से आहवान किया कि आज वृद्ध एवं महिलाओं को सुरक्षा एवं सशक्तीकरण के क्षेत्र में कार्य करें जिससे उन्हें देखभाल एवं सुरक्षा महसूस हो सके।

अध्यक्षता करते हुए मा. कुलपति प्रो0 एम0पी0 दुबे ने कहा कि समाज कार्य एक नया विषय है और इसमें विभिन्न विषयों का समावेश है। प्रो. दुबे ने कहा कि जिस तरह से महिलायें आज प्रत्येक क्षेत्र में अपनी विशिष्टता एवं पहचान को सिद्ध कर रही हैं, वह एक अतुलनीय प्रयास है। इससे समाज के विकास में एक नई गति मिलेगी। उन्होंने कहा कि हम सामाजिक विकास एवं पर्यावरण विकास आज की आवश्यकता है।

संगोष्ठी के विशिष्ठ अतिथि श्री गौरव कृष्ण बंसल, निदेशक, उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, इलाहाबाद ने कहा कि अनुशासन से ही व्यक्ति एक अच्छा समाजसेवी बन सकता है। उन्होंने कहा कि समाज में केवल न्याय होना ही आवश्यक नहीं है वरन उसका प्रदर्शित होना भी आवश्यक है।

प्रारम्भ में अतिथियों का स्वागत संगोष्ठी की सह-संयोजक डॉ0 श्रुति ने किया। दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी की रिपोर्ट आयोजन-उपसचिव डॉ0 गौरव संकल्प ने प्रस्तुत किया। संगोष्ठी का संचालन डॉ0 रूचि वाजपेई तथा धन्यवाद ज्ञापन संयोजक डॉ. जी.के. द्विवेदी ने दिया। संगोष्ठी में 07 राज्यों के लगभग 100 प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया।

हिन्दी दैनिक

इलाहाबाद

वर्ष : 6 अंक : 341 इलाहाबाद, गुरुवार 10 मार्च 2016 पृष्ठ 8 मूल्य : 1 रुपया

एक्सप्रेस

...सच का आधार

मुविवि में दो दिवसीय

राष्ट्रीय संगोष्ठी का हुआ समापन

इलाहाबाद। उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय के तत्वावधान में 'समाज कार्य के नवीन आयाम' विषय पर आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन अवसर पर मुख्य अतिथि नेहरू ग्राम भारती विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. के.बी पाण्डेय ने कहा कि सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों का आज ह्रास हो रहा है। उन्होंने शिक्षाविदों से आह्वान किया कि आज वृद्ध एवं महिलाओं हेतु सुरक्षा एवं सशक्तीकरण के क्षेत्र में कार्य करें जिससे उन्हें देखभाल एवं सुरक्षा महसूस हो सके। अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. एम.पी दुबे ने कहा कि समाज कार्य एक नया विषय है और इसमें विभिन्न विषयों का समावेश है। जिस तरह महिलायें आज प्रत्येक क्षेत्र में अपनी विशिष्टता व पहचान सिद्ध कर रही हैं, वह एक अतुलनीय प्रयास है। इससे समाज के विकास में एक नई गति मिलेगी। उन्होंने कहा कि हम सामाजिक विकास एवं पर्यावरण विकास आज की आवश्यकता है। संगोष्ठी के विशिष्ट अतिथि गौरव कृष्ण बंसल, निदेशक, उत्तार मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र ने कहा कि अनुशासन से ही व्यक्ति एक अच्छा समाजसेवी बन सकता है। समाज में केवल न्याय होना ही आवश्यक नहीं है वरन उसका प्रदर्शित होना भी आवश्यक है।प्रारम्भ में अतिथियों का स्वागत संगोष्ठी की सह संयोजक डा. श्रुति ने किया। दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी की रिपोर्ट आयोजन उपसचिव डा. गौरव संकल्प ने तथा संचालन डा. रूचि वाजपेई एवं धन्यवाद ज्ञापन संयोजक डा. जी.के द्विवेदी ने दिया। इस अवसर पर सात राज्यों के लगभग सौ प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया।